# हिंदी संगम फ़ाउंडेशन

## भारत/यू एस ए

## 2023

## वार्षिकी



सत्यमेव जयते

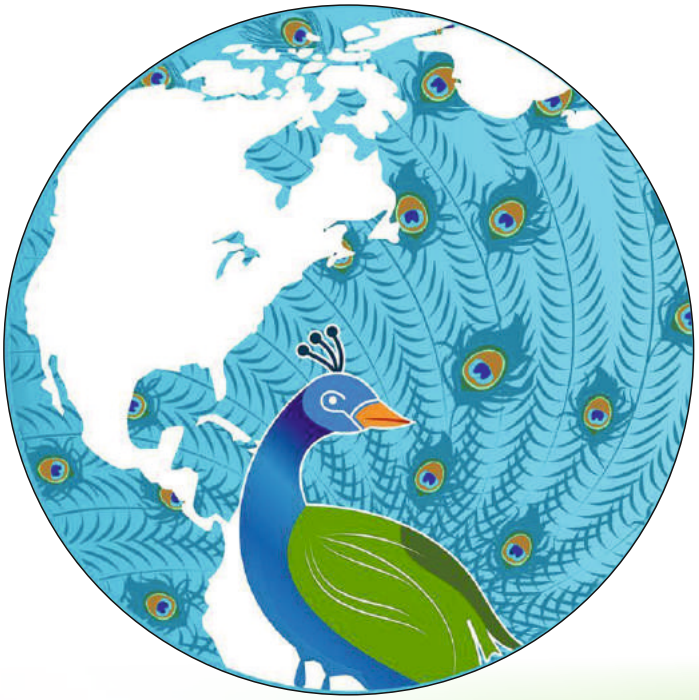

## पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

**The Fifth International Hindi Conference**

New York, October 20-21, 2023

हिंदी संगम प्रतिष्ठान

YHS युवा हिन्दी संस्थान

SHIKSHAYATAN CULTURAL CENTER मनुर्भव शिक्षायतन

ACTFL 2023 CHICAGO NOVEMBER 17-19

NYU

MICHIGAN STATE UNIVERSITY

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

## The Fifth International Hindi Conference

New York, October 20-21, 2023

## हिंदी संगम फ़ाउंडेशन

**अमेरिका:**

**संरक्षक: सम्माननीय रणधीर जायसवाल, प्रधान कोंसुल, भारतीय कोंसलावास, न्यू यॉर्क**

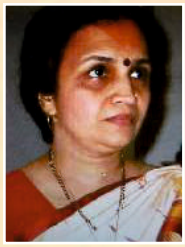

**सभापति: पूर्णिमा ए देसाई**

**अध्यक्ष: अशोक ओझा**

सचिव: संध्या भगत,
कोषाध्यक्ष: हेमा ओझा
4 मेलविल रोड, एडिसन, न्यू जर्सी, 01187

**भारत**

**अध्यक्ष: अशोक ओझा**
**उपाध्यक्ष: प्रो. बाबूराम, रोहतक (हरियाणा)**
**सचिव: बिनोद चौबे (मुंबई)**
**कोषाध्यक्ष: हेमा ओझा**
**सदस्य: जयराम मेनन, मुंबई, सरला चौधरी, जयपुर, रीतेश कुमार (गोवा)**
बी 204, मीडिया सोसायटी, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली 110075

**सहयोगी संस्था युवा हिन्दी संस्थान (अमेरिका)**

**सभापति: उपेन्द्र चिवुकुला**

अध्यक्ष: अशोक ओझा
सचिव: अखिला शेखर
कोषाध्यक्ष: शालवी अगरवाल
4 मेलविल रोड, एडिसन, न्यू जर्सी, 01187

सम्पर्क: अशोक ओझा, **001-732-318-9891; aojha2008@gmail.com**

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

**The Fifth International Hindi Conference**

**New York, October 20-21, 2023**

## Venue

**THE CONSULATE GENERAL OF INDIA, 3 EAST 64 STREET, NY NY 10065.**

## Theme

**INNOVATIONS IN HINDI INSTRUCTION (METHODOLOGY, TECHNOLOGY AND MORE): TOOLS, ENVIRONMENTS AND CHALLENGES**

HINDI SANGAM FOUNDATION, USA, a NJ based non-profit organization, (established:2015),is collaborating with New York University, Michigan State University, in association with The Consulate General of India, New York. The conference is supported by ACTFL, World Hindi Secretariat, Mauritius, Yuva Hindi Sansthan, NJ, Shikshayatan Cultural Organization, Sriniketan Foundation, USA and US based community organizations to organize the Fifth International Hindi Conferenceon Oct 20-21, 2023. Hindi Sangam Foundation organized similar conferences in 2014, 2015, 2016 and 2017 with the help of the Consulate General of India, New York and several other institutions including New York University (2014), Columbia University, Rutgers (2014) and GITAM University, Visakhapatnam, India (2017). For more information please visit: https://21stcenturyhindi.com/ihc-homebase

**Keynote Speaker**

Akash Patel, President, ACTFL ( American Council on the Teaching of Foreign Languages)

Mr. Patel is the Founder of Happy World Foundation Inc.(www.happy world foundation. us), an international nonprofit organization that promotes global citizenship education in schools and communities worldwide. He featured as TIME's Innovative Educator of the Year and elected Vice-Chairman of the National Council at UNA-USA.

**Goal**

The goal of The Fifth International Hindi Conference is to provide a forum for Hindi professionals, engaged in teaching Hindi from Kindergarten to College levels, around the world, to present and discuss innovative researches in technology and methodology in the field of Hindi education out of India. The conference aims at suggesting ways to expanding and strengthening the field of Hindi instruction around the world. as well as training. Through this conference we also aim at suggesting ways to expanding and strengthening the field of Hindi instruction around the world. To meet these goals professionals, experts and teachers from around the world will be invited to present their research and share their views.

**'आधे-अधूरे' का मंचन**

पांचवें अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, न्यू यॉर्क के उद्घाटन समारोह में, 20 अक्टूबर की शाम अटलांटा की नाट्य-संस्था 'धूप छाँव' द्वारा मोहन राकेश रचित हिंदी नाटक, 'आधे-अधूरे' का मंचन किया जाएगा। नई कहानी आन्दोलन के सशक्त हस्ताक्षर मोहन राकेश ने 1969 में इस नाटक को लिखा था। 'आधे अधूरे' समाज और रिश्तों की कहानी है जो परिवार नामक एक छत के नीचे रहते हैं। यह नाटक मध्यवर्गीय भारतीय परिवार और बढ़ते आधुनिक मूल्यों के विरुद्ध पारिवारिक मूल्यों को बनाए रखने के संघर्ष के संदर्भ में लिखा गया था। आज भी, 'आधे-अधूरे' एक औसत मध्यवर्गीय भारतीय परिवार की रोंगटे खड़े कर देने वाली वास्तविकता को प्रदर्शित करने वाली एक असाधारण कहानी बनी हुई है, जो अक्सर एक तरफ भारतीय संस्कृति और पारंपरिक मूल्यों को संरक्षित करने के बीच फंसा हुआ पाया जाता है।

**'धूप छाँव'**

'धूप छाँव' समूह की स्थापना 'संध्या सक्सेना भगत' ने की। इसमें 125 से अधिक स्थायी सदस्य हैं। ये सभी अपना समय और ऊर्जा समूह की योजनाओं को सफ़ल बनानें में देते हैं। प्रतिवर्ष समूह का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार के सांस्कतिक कार्यक्रम होते हैं। पूरे वर्ष अलग अलग स्थानों पर नाट्य प्रस्तुतियाँ होती रहती हैं। संस्था मशहूर लेखकों, जैसे, मोहन राकेश ,अमृता प्रीतम, प्रेमचंद, की रचनाओं पर आधारित प्रस्तुतियाँ कर चुकी है। निर्देशन-संध्या सक्सेना भगत, अन्य कलाकार: ऋतंभरा मित्तल, सौरभ अग्रवाल, हेतल सूरतवाला, पूर्णिमा राज, आशीष कपूर, मोईज़ हुसैन, अमित प्रसाद जुनेजा-विजय गौड़।

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

## The Fifth International Hindi Conference

**New York, October 20-21, 2023**

हिन्दी संगम फ़ाउंडेशन भारत और भारत के बाहर ग़ैर हिन्दी समुदाय में आधुनिक पद्धति से हिन्दी भाषा का शिक्षण, प्रसार और प्रचार में संलग्न है। इसके लिए हम समान विचारों वाली संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। फ़ाउंडेशन की स्थापना सन 2015 में न्यू जर्सी, अमेरिका में हुई जहाँ यह एक ग़ैर-लाभ शिक्षण संस्था के रूप में पंजीकृत है। संस्थापक-अध्यक्ष अशोक ओझा द्वारा संस्था का भारतीय संस्करण सन 2016 में नयी दिल्ली में सोसायटी एक्ट XXI (1860) के तहत स्वयं सेवी संस्था के रूप में पंजीकृत कराया गया (पंजीकरण संख्या : S/RS/DW/(SW)/27/2016/12A/80G)

फ़ाउंडेशन अब तक भारत में आधे दर्जन से अधिक हिंदी सम्मेलनों में सहभागी हो चुका है, जिनमें विशाखापत्तनम, (आन्ध्र), दिल्ली, करनाल, भिवानी, रोहतक (हरियाणा), माधेपुर (बिहार), स्थानों के आयोजन प्रमुख हैं। सन 2021 में भारत और अमरीका में हिन्दी सप्ताह आयोजनों के दौरान संस्था की प्रथम वार्षिकी पत्रिका (पंजीकरण संख्या : DL/2022/0303295 ) का प्रकाशन हुआ। पत्रिका में भाषा शिक्षण से जुड़े विद्वानों और विशेषज्ञों के लेख तथा उनकी टिप्पणियाँ प्रकाशित की गयी जिनका उद्देश्य हिंदी की औपचारिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना था।

प्रस्तुत अंक न्यू यॉर्क के भारतीय कोंसलावास में आयोजित हो रहे पाँचवे हिंदी सम्मेलन (अक्टूबर 20-21, 2013) को समर्पित है। सम्मेलन के आयोजन में कोंसलाधीश सम्माननीय रणधीर जायसवाल का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। फ़ाउंडेशन की परम्परा रही है भारतीय कोंसलाधीश उसके संरक्षक (पैट्रन) होंगे। इस परम्परा को निभाना इसलिए ज़रूरी है कि अमेरिका में हिन्दी को सशक्त बनाने के लिए दूतावास/कोंसलावास का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। चान्सरी प्रमुख माननीया सुमन सिंह कोंसलावास के प्रतिनिधि के रूप में हिन्दी को आगे बढ़ाने के लिए और विशेषत: सम्मेलन के आयोजन में सतत सहयोग करती रही हैं। इन दोनों अधिकारियों के सहयोग और समर्थन के बिना पाँचवे हिंदी सम्मेलन का आयोजन सम्भव नहीं था।

हिन्दी संगम फ़ाउंडेशन, अमरीका की सभापति पूर्णिमा देसाई हिन्दी शिक्षण के लिए हमारे सभी प्रयासों को भरपूर समर्थन और सहयोग देती आ रही हैं। उनका हृदय से आभार! न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय की समर्पित हिंदी प्राध्यापिका प्रो गैब्रिएला निक इलेवा वर्षों से हिंदी संगम फ़ाउंडेशन और सहयोगी संस्था युवा हिन्दी संस्थान के सभी शैक्षणिक उपक्रमों का मार्गदर्शन करती आ रही हैं। सन 2022 और 23 में उनके साथ मिल कर हमने फुलब्राइट-हेस परियोजना के कार्यक्रम तैयार किए जिनके लिए युवा हिन्दी संस्थान को अमेरिकी शिक्षा विभाग से अनुदान प्राप्त हुआ। इस परियोजना के माध्यम से दर्जनों अमरीकी विद्यार्थियों और शिक्षकों को भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं से अवगत कराया जा चुका है। अमेरिकन काउन्सिल ऑन टीचिंग। फ़ॉरेन लैंग्विज (ACTFL) के अध्यक्ष आकाश पटेल सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में शामिल हो रहे हैं। उन्होंने हमारा निमंत्रण स्वीकार कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। धन्यवाद!

हिन्दी संगम फ़ाउंडेशन तथा सहयोगी संस्था युवा हिन्दी संस्थान हिंदी शिक्षण के लिए अमेरिका में अनेक विश्वविद्यालयों तथा वहाँ कार्यरत प्राध्यापकों और विशेषज्ञों के साथ मिलकर कार्य कर रही है जिनमें न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय, मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय प्रमुख हैं। अमरीका में भारतीय मूल के अनेक मेधावी भाषाविदों की एक पीढ़ी तैयार हो चुकी है जिनमें राजीव रंजन (मिशिगन स्टेट), ब्रजेश समर्थ (एमरी) विश्वविद्यालय, कुसुम नैपजिक (ड्यूक ) तथा अन्य प्रमुख हैं। अनेक ग़ैर भारतीय मूल के प्राध्यापक, जैसे वेंडरबिल्ट के इलियट मैक कार्टर तथा अन्य भाषाविद चुपचाप हिंदी शिक्षण को नयी दिशा देने में संलग्न हैं, उन सभी को शुभकामनाएँ।

सम्पादक: **अशोक ओझा**

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

## The Fifth International Hindi Conference

New York, October 20-21, 2023

### Conference sponsors and supporters

We are grateful to all our sponsors, partners and volunteers who are graciously supporting the The Fifth International Hindi Conference in New York, October 20-21, 2023.

**Honorable Randhir Jaiswal, Consul General, The Consulate General of India, New York**

Randhir Jaiswal, Honorable Consul General of India, is the advisor of the Fifth International Hindi Conference and patron of Hindi Sangam Foundation, the organizer of the conference. He encourages and supports all efforts related with promotion of Hindi in the United States. Honorable Jaiswal's active support has led to organizing the Fifth International Hindi Conference at the premises of the Consulate General of India, known as New India House. The office of the Consulate is located in the Upper East Side Historic District of Manhattan. It serves the residents of ten states of the United States: Connecticut, Maine, Massachusetts, New Hampshire, New Jersey, New York, Ohio, Pennsylvania, Rhode Island and Vermont.

**पूर्णिमा ए देसाई**

क्वींस,न्यू यॉर्क निवासी श्रीमती पूर्णिमा देसाई हिंदी संगम फ़ाउंडेशन,अमेरिका की सभापति होने के साथ-साथ 'शिक्षायतन' सांस्कृतिक संस्था और 'श्री निकेतन फ़ाउंडेशन'नामक दो ग़ैर लाभ संस्थाओं की प्रमुख हैं जिन के माध्यम से वे दशकों से अमेरिका में भारतीय संस्कृतिका प्रचार-प्रसार कररही हैं। श्रीमती देसाई भारतीय संगीत, नृत्य तथा पद्यपाठ में पारंगत हैं और हिन्दी शिक्षण से सम्बंधित कार्यों में विशेष रुचि रखती हैं।

**AMERICAN COUNCIL ON TEACHING OF FOREIGN LANGUAGES (ACTFL)**

ACTFL is a membership community comprised of language education professionals who hold a strong passion for enhancing cultural richness and diversity within education, spanning across various levels. Collaboratively, they offer a range of resources designed to tackle challenges and adapt to the evolving requirements of language educators and their students. The innovative research, standards, assessments, professional development opportunities, and publications provided by ACTFL empower this community to drive forward the advancement of language learning practices. The impact of their collective efforts ripples through society, creating a positive influence on learners, one individual at a time.

**The South Asian Language Programs at New York University (NYU)**

The South Asian Language Programs at New York University (NYU) were founded in 1995 by the late Professor Susham Bedi and since 1998 have been headed by Prof. Gabriela Nik Ilieva. They are housed in the Department of Middle Eastern and Islamic Studies. Their initiatives and projects are also supported by the Hagop Kevorkian Center, NYU. Since 2008 a Hindi and Urdu Teacher Training Institute has run every summer at NYU and has trained more than 500 instructors from the U.S., India, Pakistan and several countries in Europe.

## Conference sponsors and supporters

**प्रो. गैब्रिएला निक इलेवा, न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय**

न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय की प्रधान हिन्दी प्राध्यापिका गैब्रीएला जी का व्यक्तित्व एक चुंबकीय क्षेत्र जैसा है जिस की परिधि में अमेरिका के हिंदी अध्यापकों का समूह ज्ञानवर्धन करता रहता है-सन 2021 तक स्टारटॉक कार्यक्रमों के ज़रिए और अब न्यू यॉर्क, मिशिगन स्टेट तथा यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्सस (ऑस्टिन) के संयुक्त प्रयास से चल रहे हिन्दी उर्दू शिक्षक प्रशिक्षण कार्यकर्मों के माध्यम से । सम्मेलन से लेकर फुलब्राइट-हेस और अन्य प्रयासों की सफलता में श्रेय जाता है प्रोफ़ेसर गैब्रिएला निक इलेवा को।

**Piyush J. Patel, Philanthropist**

Piyush J. Patel is an accomplished entrepreneur who has built a multi-million dollar conglomerate that spans the globe. Spread throughout the USA, Europe and Asia, Piyush has received numerous awards for his charitable work worldwide. He is the first person of Indian ancestry to be inducted into the Rhode Island Heritage Hall of Fame for his business contributions and philanthropy with the Irish community. His business ventures encompass a multitude of industries, such as real estate development, manufacturing (water treatment, oil drilling, concrete additives), technology, hospitality and performing arts centers. Piyush maintains a simple lifestyle and devotes much time to humanitarian causes in both the USA and in his native land.

**उपेन्द्र चिवुकुला**

न्यू जर्सी के फ्रैंकलिन नगर निवासी उपेन्द्र भारतीय समुदाय के एक चर्चित व्यक्ति हैं। उनकी मातृ भाषा तेलुगू है लेकिन हिन्दी के प्रति उनका अगाध प्रेम सदा झलकता है। सहयोगी संस्था युवा हिन्दी संस्थान की स्थापना के समय से ही वे हमारे मार्गदर्शक रहे हैं। न्यूजर्सी असेंबली में चारबार जनता का प्रतिनिधित्व कर चुके उपेन्द्र प्रदेश के ऊर्जा विभाग में कमिशनर भी रहे। फ्रैंक्लिन नगर के मेयर पद को भी सुशोभित किया। उपेन्द्र भारतीय समुदाय के सच्चे प्रतिनिधि हैं।

**Professor Rajiv Ranjan, Michigan State University**

Rajiv has emerged as a prominent linguist in America. His dedication to enrich language education of Hindi and other Asian languages is unchallenged. He works at the South Asian Studies department of Michigan State University, that was established in 1855. By1862, MSU stood as the nation's premier land-grant university. Over the decades, the university has continued to be a model of what a land-grant university can and should do. Michigan State University has been advancing the common good with uncommon will for more than 165 years. A top global university, MSU pushes the boundaries of discovery to make a better world while providing students with life-changing opportunities.

**डॉक्टर सुनील कुलकर्णी, केंद्रीय हिन्दी संस्थान**

भारत सरकार के उच्चतर शिक्षा विभाग द्वारा सन 1961 में स्थापित केंद्रीय हिन्दी संस्थान और उसके निदेशक डॉक्टर सुनील कुलकर्णी हिन्दी शिक्षण के कार्यों को आगे बढ़ा रहे हैं जिनका मुख्य उद्देश्य दर्जनों ग़ैर भारतीय देशों के विद्यार्थियों को हिन्दी की औपचारिक शिक्षा प्रदान करना है।संस्थान का मुख्यालय आगरा में है तथा इसके आठ क्षेत्रीय केंद्र दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर, तथा अहमदाबाद में सक्रिय हैं। संस्था विश्व में हिन्दी के प्रसार की दिशा में अनेक कार्यक्रम कर रही है।

## Conference sponsors and supporters

**डॉक्टर बिजोय मेहता**
क्वींस, न्यू यॉर्क निवासी डॉक्टर बिजोय मेहता सेवा निवृत्त हृदय रोग विशेषज्ञ होने के साथ-साथ वरिष्ठ हिन्दी कवि हैं। वे पाँचवे हिंदी सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान होनेवाले कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। डॉक्टर मेहता फ़्लशिंग, न्यू यॉर्क में हिंद मंदिर के संचालन में मुख्य भूमिका निभाते रहे हैं, प्रतिवर्ष हिंदी कवियों को अमेरिका में अमंत्रित करते हैं। चंद्र गुप्त मौर्य और तथागत के पौराणिक कथानक पर रचित उनके काव्य अतिलोकप्रिय हैं। डॉक्टर मेहता हिंदी संगम फ़ाउंडेशन के पूर्व सभापति तथा अखिल विश्व हिंदी समिति के संस्थापक हैं।

**Dr. Mukund Thakar**
Dr. Mukund Thakar, president and founder of Indian Nursing Home, Program began his career as a medical professional and he has established an Indian nursing home program to accommodate the Indian elderly. The Indian nursing home program was developed in 2005 by creating an environment where the Indian elderly would feel comfortable in their living arrangement and where their medical and personal needs are met to ensure their well-being and happiness. The accurate formula of medical care enriched with the Indian culture has revolutionized the way our senior citizens are cared for in nursing homes.

**प्रो. बाबूराम**
रोहतक के बाबा मस्तनाथ विश्व विद्यालय हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो बाबू राम हिंदी संगम फ़ाउंडेशन की भारतीय गतिविधियों को संचालित करते हैं। कुरुक्षेत्र (हरियाणा) निवासी बाबूराम आजीवन हिन्दी शिक्षण और इसके प्रचार- प्रसार में लगे रहे। फ़ाउंडेशन के हिंदी सम्मेलनों को सफल बनाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

**डॉक्टर.माधुरी रामधारी**
विश्व हिंदी सचिवालय, मरिशस की डॉक्टर श्रीमती माधुरी रामधारी हिन्दी प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाती रही हैं। वे भारत के बाहर हिंदी प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील हैं और युवा हिन्दी संस्थान तथा हिंदी संगम फ़ाउंडेशन के सभी हिन्दी प्रयासों को प्रोत्साहित करती रही हैं।

**संध्या भगत, निदेशक, 'धूप-छांव'**
अटलांटा निवासी संध्या भगत हिन्दी संगम फ़ाउंडेशन की सचिव हैं। वे एक दशक से भी अधिक समय से युवा हिन्दी संस्थान के हिंदी कक्षाओं में वरिष्ठ शिक्षिका रही हैं। नाटिका मंचन विधा की शिक्षण में समाहित करना उन की विशेष शैली है। हिन्दी शिक्षार्थियों को नाटक विधा से जोड़ कर संवाद सिखाना संध्या जी को बख़ूबी आता है जिस कारण उन के विद्यार्थी बोलने में शीघ्र पारंगत होते हैं। अपनी नाट्य संस्था, 'धूप-छांव' के माध्यम से वे सैकड़ों हिन्दी प्रेमियों का दिल जीत चुकी हैं। सम्मेलन के समापन समारोह के अंग के रूप में 'धूप-छांव' की मंच प्रस्तुति 'आधे अधूरे' कामंचन होगा, जिसका निर्देशन संध्या जी ने किया है।

# विषय-सूची


पृष्ठ संख्या — विषय

02.....**हिन्दी संगम फ़ाउंडेशनपेज**

03.....**Keynote Speaker**

04.....**सम्पादकिय वार्षिकी**

05-07.....**Conference sponsors and supporters**

09-10.....**अशोक ओझा,** अमेरिका में हिंदी शिक्षा: आवश्यकता और उपयोगिता

11.....**शुभ्रा प्रकाश,** "सुन्दर लेखन आपकी मनोदशा दर्शाता है"

12-13.....**रेणु,** अनौपचारिक शिक्षण में लोक-प्रज्ञा की भूमिका

14.....**सुजाता सिंह,** सामुदायिक प्रयासों से हिंदी शिक्षण

15-16.....**प्रेमिका लता,** जोगिंद्र सिंह कंवल की कहानियों में चर्चित समस्याएँ

17 and 20....**आभा गुप्ता ठाकुर, रचना,** पुनर्रचना और संप्रेषण (नाट्य- शिक्षण प्रविधि के विशेष सन्दर्भ में)

19-20.....**Ajenda**

21.....**उषा शर्मा,** प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में नवाचार

22-23.....**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा,** ग़ैर-भारतीय विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण

24-25..... **प्रो. रेखा सेठी और अनूप भार्गव,** अनुवाद के क्षेत्र में 'कृत्रिम बुद्धि' का उपयोग

26-27..... **प्रो. दीपेंद्र सिंह जाडेजा,** हिंदी और गुजराती: कितने दूर, कितने पास

28.....**सागर देसले,** हिंदी भाषा शिक्षण में प्रौद्योगिकी

29-30.....**Sushma Malhotra, Integrated Performance Assessment**

31.....**ममता त्रिपाठी, पैट्रिका सबरवाल, नीना सरीन और अनुभूति काबरा**
आधुनिक हिंदी पाठ्यक्रम और परम्परागत भारतीय जीवन

32.....**पैट्रिका सबरवाल, नीना सरीन, ममता त्रिपाठी, अनुभूति काबरा**
प्रस्तुत कर्ताओं के परिचय

33.....**YHS Fulbright-Hays 2022 Participants**

34.....**Traditional Eco Life: YHS Fulbright-Hays 2022**

**अशोक ओझा**

## अमेरिका में हिंदी शिक्षा: आवश्यकता और उपयोगिता

अमेरिका में रह रहे लग भग 44 लाख भारत वंशियों में से ऐसे कितने हैं जो यह सोचते हैं कि उनके बच्चों को हिंदी सिखनी चाहिए ? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है क्योंकि इसके उत्तर में ही निहित है अमेरिका में हिंदी शिक्षण के लिए मज़बूत आधार मिलने की सम्भावना। इसी के साथ यह प्रश्न भी महत्वपूर्ण है कि अमेरिका की शिक्षा नीति में अंग्रेज़ी के अलावा अन्य भाषाओं का क्या महत्व है? आइए, इन प्रश्नों के संदर्भों की छानबीन करें।

अमेरिका के प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च विद्यालयों का प्रशासन स्थानीय स्कूल बोर्ड द्वारा संचालित होता है जिनका बजट स्थानीय निवासियों द्वारा नगर पालिका प्रशासनों को दिए कर और राज्य तथा फ़ेडरल (केंद्र) सरकारों के आर्थिक अनुदान से तैयार होता है। स्थानीय निवासियों में से दस प्रतिशत या उससे अधिक लोग एकमत होकर अपनी भाषा का अध्ययन कराना चाहें तो वे स्थानीय स्कूल बोर्ड पर दबाव डाल सकते हैं। उन्हें अपने बच्चों को अपनी भाषा की शिक्षा दिलाने का पूरा हक़ है।

अमेरिका के दर्जनों कॉलेज और विश्व विद्यालयों में हिंदी की शिक्षा की व्यवस्था है। फ़िलाडेलफ़िया की आई वी लीग 'यूनिवर्सिटी ऑफ फ़िलाडेलफ़िया' के पुस्तकालय में भारतीय साहित्य और दर्शन पर एक अलग विभाग ही है, जो पुस्तकालय की एक पूरी मंज़िल पर फैला हुआ है। अमेरिकी विश्वविद्यालयों में 'अंग्रेज़ी के अतिरिक्त एक अन्य भाषा' की क्रेडिट लेने का प्रावधान है, जिसे पूरा करने वाले स्नातक को सभी सरकारी नौकरियों में प्रधानता मिलती है।

हिंदी न केवल अमरीका की 'विदेशी भाषा' है, उसे 'हेरिटेज' भाषा कहते हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा जारी निर्देश के अंतर्गत हिंदी अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार-वाणिज्य के लिए आवश्यक भाषा घोषित की जा चुकी है, जिस कारण उसके विस्तार और शिक्षा के लिए अमेरिकी शिक्षा विभाग की तरफ़ से अनेक पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। अमेरिका के विदेश विभाग और रक्षा विभागों के तहत सैनिक और कूटनीतिक कर्मचारियों और अधिकारियों को हिंदी शिक्षा प्रदान करने के लिए विशेष शिक्षण संस्थान चलाए जाते हैं।

अमेरिकी शिक्षा तंत्र भारतीय परम्परा, जीवन दर्शन से अनभिज्ञ नहीं है। अमेरिका में शायद ही ऐसा कोई शिक्षार्थी हो, जो मार्टिन लूथर किंग जूनियर द्वारा साठ के दशक में चलाए गए नागरिक संघर्ष अभियान पर महात्मा गांधी के 'अहिंसा' आंदोलन के प्रभाव से अपिरिचित हो। स्कूलों की दीवारों पर गांधी की यह उक्ति भी पढ़ने को मिल सकती है:

'दुनिया में बदलाव चाहते हो तो पहले स्वयं बदलो' (बीद चेंज यू वॉट टू सी इन द वर्ल्ड )' अमेरिकी शिक्षा नीति में यूरोप की भाषाओं, जैसे फ्रेंच, जर्मन, लैटिन आदि को प्रमुखता नहीं दी जाती हालाँकि प्रारम्भिक से उच्च विद्यालयों में, उनके 'विश्व भाषा' विभागों में यूरोप की भाषाओं की शिक्षा की पूरी व्यवस्था है। लेकिन केंद्र (फ़ेडरल) शासन के शिक्षा विभाग द्वारा विदेशी भाषा के प्रसार के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों, पुरस्कारों में यूरोप की भाषाएँ प्रतिबंधित हैं, उनमें एशिया की भाषाओं, हिंदी, चीनी, अरबी, कोरियन, जापानी आदि को तरजीह दी जाती है। इन्हीं कार्यक्रमों में से एक है:

## फुलब्राइट-हेस पाठ्यक्रम विकास कार्यक्रम ।

फुलब्राइट प्रोग्राम साठ के दशक में भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और अमरीकी राष्ट्रपति केनेडी के बीच हुए क़रार के तहत संचालित किया जाता है जिस के अंतर्गत दोनों देशों के कॉलेज विद्यार्थी और शिक्षक अपने अनुभवों का आदान प्रदान करने के लिए एक दूसरे देशों में भेजे जाते हैं। दिल्ली में फुलब्राइट आयोग और वाशिंगटन डीसी में अमरीकी शिक्षा विभाग इन शैक्षणिक कार्यक्रमों की देख रेख करता है। फुलब्राइट-हेस कार्यक्रम का उद्देश्य अमरीका में भाषा शिक्षण से जुड़े लोगों को उन की भाषा की मूल संस्कृति का ठोस ज्ञान और अनुभव प्रदान करना है जिसके आधार पर वे अमेरिका में प्रामाणिक भाषा शिक्षा प्रदान कर सकते हैं।

युवा हिंदी संस्थान और न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के संयुक्त प्रयासों से विकसित भाषा शिक्षण कार्यक्रम को सन 2022 में पहली बार फुलब्राइट-हेस पुरस्कार प्राप्त हुआ जिसके अंतर्गत अक्टूबर और नवंबर 2022 के महीनों में 12 अमेरिकी शिक्षकों और 'छात्र - शिक्षकों'-विश्विद्यालयों में शिक्षा पारहेवे विद्यार्थी जो शिक्षक पेशा में जाना चाहते हैं-का समूह एक माह के लिए भारत के अध्ययन दौरे पर आया। परियोजना सलाहकार प्रोफेसर गैब्रिएलाइलेवा और निदेशक अशोक ओझा के नेतृत्व में यह दल भारत आया। दौरे का उद्देश्य अमेरिका के शिक्षकों और छात्र-शिक्षकों को भारत में विभिन्न स्थानों पर "ग्लोबल वार्मिंग" और जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों तथा उस से उत्पन्न वास्तविकताओं से परिचित कराना था। प्रतिभागियों को हिंदी भाषा की मूल संस्कृति में प्रामाणिक सामग्री एकत्र करने की भी आवश्यकता थी। अध्ययन यात्रा ने प्रामाणिक सामग्री प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और बाद में भाषा कक्षा में इस का उपयोग करने के लिए पाठ्यक्रम निर्माण का आधार तैयार किया।

अमेरिकी शिक्षा विभाग की तरफ़ से वर्ष 2022-23 के लिए युवा हिंदी संस्थान और न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूपसे विकसित 'फुलब्राइट-हेस हिंदी भाषा पाठ्यक्रम निर्माण ग्रुप प्रोजेक्ट एब्रोड' पुरस्कार विजेता, अशोक ओझा विगत डेढ़ दशकों से अमेरिका के न्यू जर्सी, पेंनसिलवानिया प्रदेशों में औपचारिक हिंदी कार्यक्रमों का निर्देशन में दो ग़ैर लाभ संस्थाओं, 'युवा हिंदी संस्थान' और 'हिंदी संगम फ़ाउंडेशन' के संस्थापक अध्यक्ष हैं। वे भारत में नवभारत टाइम्ज़ समाचार पत्र के मुंबई संस्करण में दो दशकों तक संवाददाता के रूप में कार्यरत रहे। सन 1996 से अमेरिका के न्यू जर्सी प्रदेश में निवास कर रहे है।

ईमेल: **aojha2008@gmail.com**
फ़ोन: **001-732-318-9891**

## "सुन्दर लेखन आपकी मनोदशा दर्शाता है"
## शुभ्रा प्रकाश

अक्षरों की इस अद्भुत कहानी और उन् अक्षरों को सजा कर पेश करने वाले फ़ॉन्टवाला की कहानी, 'फॉन्टवाला' हिंदी नाटक अक्षरों के कलाकार राजीव प्रकाश के जीवन पर आधारित है| कंप्यूटर में हिंदी फॉन्ट के जन्म लेने और बाजार से संघर्ष की गाथा है 'फॉन्टवाला'|

राजीव प्रकाश ने हिंदी, गुजराती, बंगाली, मलयालम जैसी भाषाओं के लिए फॉन्ट डिजाइन किए हैं|

हिंदी भाषा को कंप्यूटर तक लाने की कहानी के साथ साथ लेखिका शुभ्रा प्रकाश अमरीका में रहते हुए अपनी मातृ भाषा एवं अंग्रेजी को साथ-साथ लेकर चलने की कहानी भी प्रस्तुत करेंगी|

## अनौपचारिक शिक्षण में लोक-प्रज्ञा की भूमिका

रेणु

अनौपचारिक शिक्षा से आशय एक औपचारिक शिक्षा से भिन्न प्रणाली से है जो जीवन पर्यंत हमें समृद्ध करती रहती है। जहाँ औपचारिक शिक्षा, जीवन के एक विशेष कालखंड और परिवेश तक सीमित है वहीं अनौपचारिक शिक्षा घर, परिवार, समाज, जनसंचार माध्यम, खेल, लोक-प्रज्ञा आदि के माध्यम से हमें समृद्ध कर, बेहतर मनुष्य बनाती है। अतः यह तय है कि अनौपचारिक शिक्षा एक सर्वसुलभ एवं जनतांत्रिक माध्यम है। अनौपचारिक शिक्षा विश्व मानव की प्राथमिक पाठशाला है और दुनिया के समाजों को जोड़ने में सांस्कृतिक सेतु का काम करती है। साहित्यिक एवं भाषाई शिक्षण के साथ ही घर बनाने के पारंपरिक तरीके, फसलों और मौसम से सम्बंधित जानकारी, औषधीय ज्ञान, पर्यावरण और पारिस्थिति की, आचार- व्यवहार जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर भी लोक-प्रज्ञा हमारे ज्ञान का संवर्धन करती है और हमारा मार्ग प्रशस्त करती है।

अनौपचारिक शिक्षा रोजमर्रा के अनुभवों से संबंधित होने के कारण उस समाज के लिए सुलभ हो जाती है जो औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में अक्षम होते हैं। अनौपचारिक शिक्षा के लिए किसी चार दीवारी, विशिष्ट पाठ्यक्रम या निश्चित अध्यापक की आवश्यकता नहीं होती। यह तो प्रकृति की उन्मुक्त और सुन्दर वातावरण से ग्रहण की जाती है जिसमें मानव- जीवन की दिनचर्या सम्बन्धी ज्ञान और कौशल निहित है। डॉ. विद्या निवास मिश्र का मत है कि, "ऐसी शिक्षा जो किसी उपाधि के लिए न होकर अपने कार्य में कौशल वृद्धि या अपनी रूचि के क्षेत्रों में अपने को अधिक निष्णात बनाने में सहायक हो, उसे अनौपचारिक शिक्षा कहते हैं।" (प्रौढ़ शिक्षा विशेषांक, (अनौपचारिक शिक्षा सहित) साहित्य परिचय, 1978, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ 15)

इस क्रम में लोक-प्रज्ञा, लोक-परंपरा, लोक-संस्कृति आदि के द्वारा प्रदत्त शिक्षा हमें विद्यालय और विश्वविद्यालय द्वारा दी गयी शिक्षा से कहीं अधिक समृद्ध करती है। जैसे बरसों से खेतिहर समाज का पथ प्रदर्शन करती कवि घाघ- भड्डरी की कहावतें आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी कृषि और मौसम संबंधी जानकारियों के लिए उद्धृत की जाती हैं। उदाहरणार्थ: "अम्बाझोर चलै पुरवाई तब जानो बरखा ऋतु आई" (घाघ और भड्डरी – रामनरेश त्रिपाठी (सं), हिंदुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद, 1931, पृष्ठ 58)

अर्थात् यदि पुर्वा हवा इतनी जोर से चलने लगे कि आम पेड़ से झड़ने लगें तो समझ लेना चाहिए कि वर्षा ऋतु आ गई। प्राचीन समय में कृषक अपने पारंपरिक ज्ञान के आधार पर ही मौसम आधारित खेती करते थे, जिससे सभी कृषि सम्बन्धी कार्य उचित समय पर संपन्न किये जाते थे। अतः मौसम की प्रतिकूलता से फसलों का बचाव संभव हो पाता था। इसी प्रकार विविध वनस्पतियों की विशेष जानकारी और समयानुसार उनके प्रयोग का तरीका आज भी कई समुदायों के पास सुरक्षित है जो आयुर्वेदिक औषधियों के प्रयोग में आता है। भारत की चिकित्सा विरासत दो धाराओं में फैली हुई है - शास्त्रीय जो संहिताबद्ध है और लोक ज्ञान जो मौखिक है। यह लोक ज्ञान प्रायः शास्त्रीय ज्ञान के अंतराल को भरने का काम करती है। जैसे- हड्डी टूटने पर 'हड़जुड़ी' की पत्तियों को खाने और उसका पेस्ट बनाकर उस स्थान पर बाँधने से हड्डी कुछ ही दिन में जुड़ जाती है, पलाश की जड़ से दातून करने और उसके छाल का मंजन करने से यदि पायरिया है तो मुँह की बदबू ठीक हो जाती है।

इस प्रकार के पारम्परिक ज्ञान बहुत समय तक लिपिबद्ध नहीं हो सके हैं, आज भी उनका अधिकांश रूप अलिखित ही है। इस लोक ज्ञान में जहाँ मौखिक साहित्य महत्वपूर्ण है, वहीं विविध प्रकार के कौशलों से संबंधित अनुभव भी। इस लोकज्ञान में कृषि, हस्त-शिल्प, त्यौहार सम्बन्धी नृत्य-संगीत, चित्रकला, पशुपालन और वनस्पतियों की पहचान के साथ ही उनके औषधीय उपयोग से संबंधित ज्ञान प्रमुख हैं।

'भारत की नाट्य- परंपरा अभिनटनपरक है', जहाँ नाचने – गाने के साथ ही मनो- विनोद भी है, जिसके अंतर्गत् कभी धर्म तो कभी लोकोपदेश, कभी धन प्राप्ति तो कभी लोक कल्याण के उपक्रम। इसके साथ ही बुद्धि विकास और हितकर बातों का भी इसमें समावेश पाया जाता है। यह लोक नाटक विभिन्न ग्रामीण उत्सवों पर ग्रामवासियों द्वारा ही किया जाता है। बिहार के कीर्तनियाँ और बिदेसिया, उत्तर प्रदेश का नौटंकी, मध्य प्रदेश का नाच, माँच और पंडवानी, गुजरात का भवई, राजस्थान का ख्याल, महाराष्ट्र का तमाशा, केरल का कूडियट्टम, आंध्र प्रदेश का कुचिपुडि, कर्नाटक का यक्षगान, बंगाल का जात्रा आदि सम्मिलित हैं।

भोजपुरी क्षेत्र का बहुचर्चित 'बिदेसिया' लोकनाट्य ने ग्रामीण समाज के व्यापक अनुभव, प्रखर सामाजिक चेतना और सुधारवादी आदर्श स्थापित करने का प्रयास किया, जिसके प्रदर्शन से आज भी भारतीय ग्रामीण अंचल आंदोलित होता है।

भाषाई शिक्षण में तो अनौपचारिक शिक्षा का अप्रतिम योगदान है। सूरीनाम, ट्रिनिडाड, टोबागो, मॉरिशस, फ़िजी आदि देशों में हिंदी औपचारिक शिक्षण द्वारा उतनी नहीं समृद्ध हुई जितना लोक-स्मृति और रामचरित मानस द्वारा। इन देशों में उन्नीसवीं शताब्दी में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में गए प्रवासी भारतीय अपने साथ 'रामचरित मानस', अपनी भाषा और अपनी संस्कृति लेकर गए थे। वहाँ उन्होंने विभिन्न विकट परिस्थितियों, कष्टों, तिरस्कार और शोषण के बावजूद अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं को बरकरार रखा। इन प्रवासी भारतीयों ने अपनी मेहनत से न सिर्फ इन देशों को आबाद किया, बल्कि इनमें लोकप्रज्ञा व लोक संस्कृति के साथ ही हिंदी भाषा की ज्योति भी जलाए रखी।

प्रत्येक मनुष्य अपने शब्द भंडार का बड़ा हिस्सा विद्यालय द्वारा दी गयी शिक्षा से नहीं अपितु अपने जीवन अनुभव से ग्रहण करता है चूँकि लोक-प्रज्ञा का बड़ा भाग हमारी बोलियों में निहित है, आज जब बोलियों को बचाने की मुहिम चल रही है तो अनौपचारिक शिक्षा का महत्व स्वतः सिद्ध है। यही वजह है कि भारत में श्रुति परंपरा पर बहुत अधिक बल दिया गया है। वर्तमान यांत्रिक युग में लोक प्रज्ञा क्षरित होती जा रही है। इस पर चिंता व्यक्त करते हुए हबीब तनवीर कहते हैं कि, " हमने अपनी लोक-प्रज्ञा की उपेक्षा की है, उस पारंपरिक ज्ञान के भंडार की भी उपेक्षा की है, जो पंचायत प्रशासन का आधार थी। इस व्यवस्था में पेड़- पौधों और जड़ी- बूटियों की जानकारी थी, फसलों के आवर्तन, देशी खाद्य व्यवस्था, महाकाव्यों की मौखिक परंपरा, लोक-साहित्य, गाथा- गीत, लोक-गीत और ठेठ देशी प्रदर्शन कलाओं का प्राचुर्य था।" (संस्कृति का ताना बाना – अनुवाद – डॉ आभा गुप्ता ठाकुर, वाणी प्रकाशन 2015, (संस्कृति का जनपक्ष – हबीब तनवीर), पृष्ठ 43)

अतः लोक प्रज्ञा में वे सारे तत्त्व विद्यमान हैं जिसके अध्ययन से हमें इतिहास, भूगोल, कृषि- विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थ शास्त्र, मानव शास्त्र, धर्मशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, भाषा- विज्ञान आदि संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण सूत्र मिलते हैं।

**रेणु**
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शोधार्थी हैं।

## समुदायिक प्रयासों से हिंदी शिक्षण

**सुजाता सिंह**

इस लेख में मैं अमरीका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में हिंदी शिक्षण को लेकर की गयी एक नवीन पहल के बारे में अपना अनुभव साझा करुँगी। कॉर्नेल आई-वी -लीग विश्वविद्यालयों में से एक है और यहां अनेकों भाषाओं के साथ साथ हिंदी भी पढ़ाई जाती है। साल 2016 में, कॉर्नेल ने एक अनुदान शुरू किया जिसके तहत सभी विषयों के पाठ्यक्रमों को अंतर्राष्ट्रीय बनाने की कोशिश की गयी। पाठ्यक्रमों के अन्तराष्ट्रीय करण का अर्थ यह है कि अध्यापकों के नेतृत्व में अमेरिका से बाहर अल्प-कालिक पाठ्यक्रम की शुरुआत की जाय जिससे छात्रों को उस विषय का अंतराष्ट्रीय अनुभव भी हो सके। उदाहरण के तौर पर हिंदी पढ़ रहे छात्रों को भारत ले जाया जाए ताकि उनको भाषा ही नहीं बल्कि भारतीय संस्कृति का अनुभव करने का अवसर भी मिले। 'सेकंड लेंगुएज एक्वीज़ीशन' के क्षेत्र में कई शोधों से यह स्थापित हो चुका है कि स्टडीअब्रॉड का अनुभव नयी भाषा सीखने में अत्यंत सहायक होता है। अमेरिका में कक्षा में बैठकर हिंदी का अध्ययन करने की तुलना में भारत जाकर भाषा सीखना, एक ही शब्द को अलग अलग लहज़े में सुनना, लोगों के शब्दों के चयन के बारे में जानना और भाषा की बारीकियों को समझना कहीं ज़्यादा सार्थक है।

नई भाषा सीखने का जो अवसर विद्यार्थियों को स्थानीय परिपेक्ष में मिल सकता है वह अमरीकन कक्षा में बैठकर नहीं हासिल हो सकता है। इसके अलावा स्टडी अब्रॉड में हिंदी सीखते हुए छात्रों को सुबह से शाम तक हिंदी सीखने के अलग अलग अवसर मिलते हैं जबकि एक पारम्परिक अमेरिकी कक्षा में उन्हें एक सीमित दायरे में ही यह अवसर मिलता है। छात्रों को भाषा में ही कुशलता नहीं प्राप्त होती है बल्कि भारतीय लोगों के संपर्क में आने से वे हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं से अवगत भी होते हैं। यह प्रक्रिया उन्हें एक वैश्विक नागरिक या ग्लोबल सिटिज़न के रूप में विकसित होने में मददगार साबित होती है।

भाषा सीखना कक्षा तक ही सीमित न रहे इसके लिए मैं मेरे छात्रों को हर उस अवसर का अनुभव करने को प्रेरित करती हूँ जहां वे हिंदी सुन सकें और भाषा का अभ्यास कर सके। हालांकि ऐसे अवसर अक्सर भारतीय त्योंहार, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शादी समारोह आदि में ही प्राप्त हो पाते हैं। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैं ने 'सर्विस लर्निंग कोर्स' की शुरुआत की। मैं चाहती थी कि मेरे कॉर्नेल छात्र भारत की कुछ संस्थाओं में समाज सेवा करते हुए हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति सीखें। एक पारम्परिक विनिमय के ज़रिये हिंदी छात्रों को भारतीय समाज के सांस्कृतिक मूल्यों का अनुभव मिले और साथ ही वे अपने व्यक्तिगत कौशल के आधार पर भारतीय समुदाय में अपना योगदान प्राप्त कर सकें। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रख मैंने भारत में एक गैर-सरकारी संगठन द्वारा संचालित किसी ऐसे विद्यालय की खोज शुरू की जहां अनिवार्य सुविधाओं के आभाव से ग्रसित बच्चों को मुफ़्त में शिक्षा प्राप्त होती है। इस सर्विस लर्निंग कोर्स के द्वारा जहां एक तरफ़ उनके बच्चों को कॉर्नेल हिंदी विश्वविद्याल के छात्रों के द्वारा अंग्रेजी शिक्षा का लाभ प्राप्त हो सकता है वही बच्चों के साथ काम करते हुए कॉर्नेल विद्यार्थिओं को हिंदी भाषा, संस्कृति, और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर भी मिल सकता है।

किसी भी स्टडी अब्रॉड प्रोग्राम को शुरू करने की कई चुनौतियाँ होती हैं। एक पहलू शासकीय या ब्यूरो क्रेटिक होता है और दूसरा व्यावहारिक। इस प्रोग्राम को शुरू करने के महत्व को कॉर्नेल यूनिवर्सिटी अच्छी तरह समझती थी इसलिए कागज़ी कार्यवाई सम्बन्धी कार्यों में उनका बहुत सहयोग रहा। मैंने इस प्रोग्राम की रूपरेखा बनारस शहर को केंद्र में रखकर रची थी। और इसलिए मैंने वहाँ एक नॉन-प्रॉफिट स्कूल के साथ काम करने का निश्चय किया क्योंकि मैं उनके कार्यों से परचित थी। इसके अतिरिक्त मैंने छात्रों के लिए ऐसे परिवार ढूंढें जिनके साथ रहकर वे हिंदी का अभ्यास करने के साथ ही अपने व्यक्तिगत संबंध भी स्थापित कर सकें चार हफ़्तों के इस अल्पकालिक पाठ्यक्रम में, हिंदी विद्यार्थियों की दिनचर्या में योग, हिंदी का औपचारिक शिक्षण, कुकिंग क्लास से, नॉन-प्रॉफ़िट विद्यालयों के बच्चों को पढ़ाना, और भारतीय संस्कृति से सम्बंधित व्याख्यान शामिल थे। इसके अलावा मनोरंजन के लिए उनके पास कुछ खाली समय होता था जिसका उपयोग वे सैर, नाव से गंगा नदी के घाटों के दर्शन और खरीदारी में करते थे। कार्यक्रम का अंतिम अनिवार्य भाग वह था जिसमें सभी सहपाठियों ने अपने शिक्षकों के सामने अपने छह हफ़्तों के अनुभवों को साझा किया। उनकी यह प्रस्तुति हिंदी में हुई जो काफ़ी सराहनीय उपलब्धि थी। यह अनुभव छात्रों के लिए बहुत ही समृद्ध रहा। यह एक ऐसा अनुभव था जिसने विद्यार्थिओं को हिंदी के वास्तविक अर्थ को समझने में मदद की। मेरी व्यक्तिगत मान्यता यह है कि यह कोर्स विद्यार्थिओं के जीवन का अविस्मर्णीय अनुभव रहा और हिंदी सीखने की प्रक्रिया में उनकी दीर्घ कालीन यात्रा में एक सार्थक कदम था।

**सुजाता सिंह**
कॉर्नेल विश्वविद्यालय में वरिष्ठ लेकचरार है।

# जोगिंद्र सिंह कंवल की कहानियों में चर्चित समस्याएँ

**प्रेमिका लता**

जोगिंद्र सिंह कंवल जी का पालन-पोषण पंजाब में हुआ था। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वे फीजी चले गए। कंवल जी के कथा साहित्य में फीजी के प्रवासी भारतीय जीवन की झलक मिलती है। पंजाबी और उर्दू भाषाओं पर अधिकार होने के बावजूद उन्होंने हिंदी में उपन्यास, काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, निबंध, आलेख, आलोचनाएँ आदि विविध विधाओं में लिखकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। कंवल जी ने सदैव अपनी रचनाओं के माध्यम से फीजी के जन-जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है। फीजी में बसे भारतीय मूल के लोगों ने अनगिनत कष्टों का सामना किया है। विभिन्न राजनैतिक तख्ता-पलटों (कू) ने इस छोटे से देश को अत्यधिक प्रभावित किया है। जोगिंद्र सिंह कंवल जी की रचनाएँ इन्हीं दर्दों को चित्रित करती हैं। कंवल जी अपनी कहानियों में आर्थिक समस्याओं, नारी समस्या के विविध रूप, वृद्ध जीवन की समस्या तथा राजनीतिक समस्याओं को उजागर करते हैं।

फीजी में तख्ता-पलटों के बाद बेरोजगारी बढ़ी। आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा था। जोगिंद्र सिंह कंवल जी की कहानियों में अर्थ के अभाव से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का चित्र बखूबी अंकित है। अर्थ के अभाव से उत्पन्न गरीबी तथा विवशता का अत्यंत मार्मिक चित्रण कंवल जी की कहानी 'सूर्य ग्रहण' में हुआ है। इस कहानी के केंद्र में है शबनम। वह किराए के मकान में अपने बेटे के साथ रहती है। आर्थिक समस्या से जूझते हुए वह अपने गहने बेच देती है। जब उसके पास कोई और रास्ता नहीं बचता है तब वह विवश होकर अपने पति के दोस्त से शादी कर लेती है। जोगिंद्र सिंह कंवल की कहानियों में निर्धनता की जहाँ चित्रण आया है, वहाँ उसके परिवेश को भी जीवंत रूप में चित्रित किया गया है।

"सूर्य ग्रहण" कहानी में ऐसे ही चित्रण का एक अंश इस प्रकार है - घर में एक सेंट भी न बचा। उसने अपनी सोने की अंगूठी और गले का हार भी बेच दिए। आखिर पड़ोसियों से कब तक उधार लेकर खाती रहती? कई बार उनसे मांग चुकी थी। अब उसे शर्म आने लगी थी। पिछले तीन महीनों से मकान का किराया भी अदा नहीं हुआ था।

**<u>नारी समस्या के विविध रूप</u>**

जोगिंद्र सिंह कंवल ने अपनी कहानियों में नारी समस्या के विभिन्न रूपों का अत्यंत विस्तृत एवं सूक्ष्म वर्णन किया है। समाज में नारी की स्थिति, उसके प्रति समाज का दृष्टिकोण, शिक्षा-दीक्षा तथा उसकी मानसिकता आदि पक्षों पर कंवल जी ने अपनी कहानियों में विशेष प्रकाश डाला है। "महक अपनी मिट्टी की" कहानी में किरण जिस लड़के से प्रेम करती है उस लड़के को उसके माता-पिता पसंद नहीं करते और वे उसकी शादी कनाडा के एक आदमी से तय कर देते हैं।

"अंधेरे उजाले के बीच" कहानी में नारी शोषण देखने को मिलता है। इस कहानी में जब रामदास लूके के घर जाने के लिए अपनी पत्नी को मिठाई का एक पार्सल बनाने को कहता है तो उसकी पत्नी उसे कर्फ्यू की याद दिलाती है। इस पर रामदास उसे थप्पड़ मारता है। ऐसी कई नारियां हैं जो चार दीवार के अंदर मार खाती है पर चुप ही रहती हैं। इस प्रकार जोगिंद्र सिंह कंवल ने अपनी कहानियों के द्वारा नारी समस्या के विभिन्न स्वरूपों का विस्तृत वर्णन किया है।

**वृद्धावस्था की समस्याएँ**

वृद्धावस्था उम्र का एक ऐसा पड़ाव है जहाँ पहुँचकर व्यक्ति के जीवन में एक ठहराव आ जाता है। इस कठिन स्थिति में उसके पास बहुत अधिक समय रहता है किंतु उसके लिए किसी के पास समय नहीं रहता। जोगिंद्र सिंह कंवल की कहानियों में वृद्धजनों का आत्म-संघर्ष और अपेक्षा बखूबी से चित्रित है। "हम लोग" कहानी में रामदुलारी का वृद्ध जीवन देखने को मिलता है। वृद्धा वस्था में वह अकेले ही रह रही है। उसके बच्चे विदेश चले गए हैं। उसके पास बात करने के लिए कोई भी नहीं है। जब विमल उससे मिलने तवुआ जाता है तो वह उससे कहती है, "उस शाम हमारे साथ महेश था। एक विदेशी लड़का। अपनी भीतरी पीड़ा की चर्चा करना अच्छा न समझा। उसके सामने अपने निजी बखेड़ों की बातें शोभा न देतीं।" रामदुलारी के अपने बच्चे उसके पास नहीं थे तो उसने विमल से अपना दुःख बाँटना स्वीकार किया।

**राजनीतिक समस्या**

जोगिंद्र सिंह कंवल जी की कहानी संग्रह "हम लोग" का प्रकाशन फीजी में तख्ता-पलट- "कू"- के बाद हुआ था इसलिए उनकी सभी कहानियों में राजनीतिक समस्या देखने को मिलती है। सत्ता पलट जाने की वजह से बेरोजगारी बढ़ने लगी थी, उपद्रव होने लगा था। ऐसे में कई लोग एक बेहतर जिंदगी के लिए विदेश में बसने के लिए जाने लगे थे। कंवल जी की कहानी "हम लोग" में देखने को मिलता है कि रामदुलारी के जमीन की अवधि खत्म होने वाली थी और सत्ता के पलट जाने की वजह से नई लीज मिलना मुश्किल था इसलिए उनका मझला बेटा आस्ट्रेलिया चला गया था। इसी प्रकार "सूर्य ग्रहण" कहानी में प्रदीप बेरोजगारी की वजह से न्यूजीलैंड चला जाता है। माता-पिता भी अपनी बेटियों की शादी विदेश में करने की ताक में होते क्योंकि उन्हें यही लगता था कि फीजी में उनका भविष्य उज्जवल नहीं हो सकता।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि लेखक ने फीजी में पाई जाने वाली प्रत्येक प्रमुख समस्या को सामने रखकर, अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उसका चित्रण प्रस्तुत किया तथा उसके समाधानों की दिशाओं की ओर भी इंगित किया है।

**प्रेमिका लता**
यूनिवर्सिटी ऑफ़ फीजी में प्राध्यापिका हैं।

# रचना, पुनर्रचना और संप्रेषण
## (नाट्य- शिक्षण प्रविधि के विशेष सन्दर्भ में)

**आभा गुप्ता ठाकुर**

'नाटक कैसे पढ़ाया जाए' पर चर्चा इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि नाटक पढ़ाने वाला शिक्षक, न निर्देशक है न अभिनेता, न दर्शक। उसकी मूल समस्या यह है कि यदि वह सिर्फ पाठ का विश्लेषण करता है तो भी नाटक के साथ न्याय नहीं करता और यदि सिर्फ रंगमंच के माध्यम से नाटक को समझाने की चेष्टा करता है तो भी विद्यार्थी की समझ मुकम्मल नहीं होती। नाटक की कोरी व्याख्या छात्र को रंग तत्वों से अपरिचित रखती है तो सिर्फ प्रस्तुति के माध्यम से पढ़ाया गया नाटक पाठ की अनेकार्थी संभावनाओं को सीमित कर सिर्फ निर्देशकीय दृष्टिकोण से नाटक की समझ को विकसित करता है।कविता और नाटक मूलतः प्रदर्शन मूलक कलाएँ हैं। यही वजह है कि संसार के अलग- अलग समाजों में काव्य-पाठ एवं नाटक की प्रस्तुति की जाती है। अध्यापन की मूलभूत चुनौती यह है कि प्रस्तुति और साहित्यिक सौन्दर्य के बीच संतुलन कैसे कायम किया जाए?

नाटककार, अभिनेता और निर्देशक की त्रयी द्वारा संप्रेषित रंग अनुभव ही नाटक को एक समावेशी साहित्यिक विधा बनाता है। प्रायोगिक विधा होने की वजह से अंतर्वस्तु, रंगभाषा के साथ सानुपातिक संयोजन द्वारा ही एक अविस्मरणीय अनुभव बनती है। कविता एवं नाटक के अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के मन में ख़ाली जगह बनाना, पूर्वरंग से उन्हें ग्रहण करने की योग्यता से युक्त करना, बीज-वपन करना और तदुपरांत उन्हें नाटक के जादुई लोक में ले जाना यदि संभव बनाया जा सका तो संवादधर्मी शिक्षण पद्धति के रूप में प्रदर्शन आधारित शिक्षण मुमकिन हो सकेगा।

हर कालजयी रचना लेखक और मानव - जीवन के संश्लिष्ट संबंधों की निर्मिती है। रचनाकार अपने इर्द- गिर्द घटित जीवन- प्रसंगों में हस्तक्षेप करते हुए रचना को पूर्णता तक पहुँचाता है। इस प्रक्रिया में उसके आंतरिक भावों, एवं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति किसी न किसी रूप में होती है। मनुष्य के भीतर घटित होने वाली यह रचना -प्रक्रिया इतनी सूक्ष्म और संश्लिष्ट है कि इसे किसी चौहद्दी में बाँधा नहीं जा सकता। प्रदर्शनकारी कलाएँ मूलतः मनुष्य की निर्मिती हैं और इनका लक्ष्य भी मनुष्य तक ही पहुँचना है। नाट्य विधा में हम इसे निराकार से साकार की साधना कह सकते हैं। देवेन्द्र राज अंकुर ( रंगमंच का सौन्दर्य शास्त्र – राजकमल प्रकाशन, 2018, पृष्ठ 131) के अनुसार:

"प्रायः यह सवाल उठाया जाता है कि साहित्य की दूसरी विधाओं से अलग नाटक के अध्ययन की क्या विधि हो सकती है ? ... अपनी प्रदर्शन मूलक प्रकृति के कारण उसे साहित्य से अलग करके भी देखा जाता है, नाटक की इसी दोहरी आयामिता की वजह से उसके अध्ययन और अध्यापन को लेकर हमेशा प्रश्न उठाए जाते रहे हैं- नाटक को मात्र साहित्यिक दृष्टि से विवेचित- विश्लेषित किया जाए अथवा उसके प्रस्तुतीकरण को अध्ययन का आधार बनाया जाए।... अतः यह स्वाभाविक ही है कि किसी भी नाटक का पहला अध्ययन उसके लिखित अथवा पाठ्यालेख को लेकर ही होगा और दूसरा अध्ययन उसके मंच पर प्रस्तुत आलेख से सम्बद्ध होगा। इसीलिए हर नाटक के कम- से- कम दो पाठ अवश्य होते हैं- पहला लिखित पाठ और दूसरा प्रस्तुति- पाठ।

... नाटक का अध्ययन वस्तुतः उसके इन्हीं दोनों पाठों के समेकित रूप से जुड़ा हुआ अध्ययन है, दूसरे शब्दों में कहा जाए तो पहले एक नाटक को साहित्यिक दृष्टिकोण से अपने आपको गहरा मार्मिक और खरा साबित करना होता है, और फिर अपनी प्रस्तुति में भी इन्हीं मूल्यों और प्रतिमानों की कसौटी पर कसा जाना होता है।" (पाठ के अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया एकरेखीय नहीं है। रोलां बार्थ पाठ ही 'बहुलार्थकता' के महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं। वे अर्थ के एकत्व को अस्वीकार करते हैं। उन्होंने रेखांकित किया है कि किसी भी पाठ के एक अर्थ की बजाय अनेक अर्थ भी हो सकते हैं। और पाठ में अर्थ की नहीं प्रक्रिया की खोज की जानी चाहिए। उनका मानना था कि मनुष्य का एकत्व एक भ्रान्ति है। हम वस्तुतः अनेक हैं। यही वजह है कि किसी भी पाठ में अर्थ की बहुलता संभव है। हम कह सकते हैं कि लिखा गया पाठ 'अंधों के हाथी' की तरह है। जिसे पाठक (निर्देशक, अभिनेता, रंग- प्रशिक्षक) अपनी वैचारिक बुनावट, पूर्वग्रह, सामयिक समझ एवं रंग- चेतना के विकसनशील तत्वों के आलोक में ग्रहण करता है।

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यूयॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

## 5th International Hindi Conference

**New York, October 20-21, 2023**

**th International Hindi Conference, 20-21 October, 2023 Program** (all the timings are EST)

**Friday, 20 October 2023 (2nd floor)**

3:30 - 4:00 pm - Registration

4:00 - 6:30 pm - Inaugural Event https://nyu.zoom.us/j/96817493467

- ➢ Welcome notes by Purnima Desai, 'Ganesh Prayer' and welcome notes by Ashok Ojha, Hindi Sangam Foundation and Conference Coordinator
- ➢ Hon. Randhir Jaiswal, Consul General to Inaugurate
- ➢ Address by Sunil Kulkarni, Director, Kendriya Hindi Sansthan, Ministry of Education Gov. of India, Dr. Madhuri Ramdhari, Secretary-General, World Hindi Secretariat, Mauritius
- ➢ Keynote by Aakash Patel, ACTFL president: "Inspiring Global Citizenship and Inter cultural Understanding in the Heritage Language Classroom"
- ➢ Presentation by Shubhra Prakash 'Fontwala'

7:00 - 9:00 pm - Kavi Sammelan; 9:00-10:00 pm – Dinner

**Saturday, 21 October 2023 (1st and 2nd floor)**

8:30-9:00 am – Tea and Coffee

Panel 1. 9:00-10:30 am 1st floor https://nyu.zoom.us/j/96433568675

**Priyanka Sonkar**: काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में विदेशी विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति का शिक्षण
**Vishal Kumar**: विरासत भाषा के रूप में हिंदी
**Dipendrasinh Jadeja**: गुजराती के संदर्भ में द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण
**Samina Munvar Naikawadi**: दूसरी भाषा के रूप में हिंदी

Panel 2. 9:00-10:30 am 2nd floor https://nyu.zoom.us/j/97453915342

**Mohammad Rashid**: Similarities and differences between Turkish and Hindi grammars, and current situation of Hindi language in Turkey.
**Shiv Kumar Singh**: The influence of Portuguese language/lexicon on Indian languages: A special case of Hindi; **Ved Prakash Singh**: जापान में हिंदी शिक्षण का इतिहास और वर्तमान स्थिति,
**Jyoti Sharma**: विदेशी कक्षाओं में हिंदी शिक्षण : साधन, वातावरण और चुनौतियाँ

10:30-10:45 am – Tea and Coffee

Panel 3. 10:45 am-12:15 pm 1st floor https://nyu.zoom.us/j/96433568675

**Mamta Tripathi & Arun Sharma**: Online Engagement Strategies for K-12 Students for Performance-Based Learning
**Anand Vardhan Sharma**:उच्च स्तरीय कक्षाओं में हिन्दी शिक्षण की आधुनिक शैलियों और नई तकनीक का प्रयोग,
**Kumar Bhaskar**: तकनीक और मनोरंजन के सामजंस्य से हिंदी का विस्तार

Panel 4. 10:45 am-12:15 pm 2nd floor https://nyu.zoom.us/j/97453915342

**Rekha Sethi & Anoop Bhargava**: Translating and Interpreting: Role of Artificial Intelligence
**Rajiv Ranjan**: Open Educational Resources (OER) for Heritage and Non-Heritage Hindi Learners;
**Sabeena Khatoon**: Curricular Opportunities for Teaching Hindi as a Second Language in the Digital Age; **Sagar Desale**: हिंदी भाषा शिक्षण में प्रौद्योगिकी का प्रयोग

12:15-1:30 pm – Lunch

Panel 5. 1:30-3:00 pm 1st floor https://nyu.zoom.us/j/96433568675

**Mira Singh**: हिंदी भाषा प्रवासी भारतीय संस्कृति में

**Abha Gupta Thakur**: रचना, पुन:रचना और संप्रेषण

**Yateendra Kumar**: विश्वभर में बढ़ता हिंदी का प्रभाव

**Hina Nandrajog**: Amar Chitra Kathas: The Pervasiveness of 'Dharma' in Indian Myth and History

Panel 6. 1:30-3:00pm 2nd floor https://nyu.zoom.us/j/97453915342

Fulbright-Hays Curriculum Development Grant: Enriching and Diversifying Curricula by Inclusion of Traditional Ecological Knowledge of Rural and Minority Communities of India

**Mamta Tripathi, Patrica Sabarwal, Neena Sarin, Anubhooti Kabra**

3:00-3:15 pm – Tea and Coffee

Panel 7. 3:15-4:45 pm 1st floor https://nyu.zoom.us/j/96433568675

**Sushma Malhotra**: Integrated Performance Assessment

**Usha Sharma**: प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में नवाचार

**Aruna Ghawana Thakur**: हिन्दी भाषा शिक्षण पर पुनर्विचार

**Anita Verma**: विश्व में हिन्दी भाषा का बदलता परिदृश्य

Panel 8. 3:15-4:45 pm 2nd floor https://nyu.zoom.us/j/97453915342

**Shilpa Parnami**: Developing Multicultural Communicative Competence in an Online Context: Lessons from a Bilingual Discussion Forum between Hindi and English Language Learners

**Elmar Josef Renner**: What Sense Does It Make to Translate Grammar? Imitating Constructions in the Hindi Language Classroom

**Sujata Singh**: Second Language Acquisition through Community-Based Service Learning in the 21st century

**Nora Koa**: Reconciling Learning Goals in Advanced/Superior Hindi Speakers Class

4:45-5:00 pm – Tea and Coffee

Panel 9. 5:00-6:30 pm 1st floor https://nyu.zoom.us/j/96433568675

**Soma Vyas**: हिंदी की लोकप्रियता और विशेष उपयोगिता

**Dilip Kumar**: भारत सरकार की हिंदी शिक्षण योजना: एक मूल्याँकन

**Renu**: औपचारिक शिक्षा के विविध आयाम

**Randhir Singh**: हिंदी शिक्षण में सम्भावनाएँ और चुनौतियाँ

Panel 10. 5:00-6:30 pm 2nd floor https://nyu.zoom.us/j/97453915342

**Jay Prakash Pandey**: विलुप्त होती मातृ भाषाएं और भारत

**Chandrika Das**: Ram Katha in the Visual and Performing Arts of Rajasthan

**Neelam Rathi & Anupama Shrivastava**: Innovative pedagogy of Hindi literature

**Vinita Sinha**: Translation as Adaptation, Appropriation and Recontextualization

6:45-7:15 pm 2nd floor – Closing Ceremony and Participation Certificates

7:30-8:30 pm 2nd floor – Closing event: Play: "आधे-अधूरे" का मंचन by 'धूप छाँव' समूह, Writer: Mohan Rakesh, Director: Sandhya Saxena Bhagat, Background music: Anil Bhagat, Actors: Amit Prasad, Aashish Kapoor, Deepti Sharma, Manish Dubey, Moiz Hussain, Poornima Raj, Ritambhara Mittal and Vijay Gaur

8:30-9:30:00 pm – Dinner

पारंपरिक रंग-शैलियों में सम्प्रेषण की प्रक्रिया स्वतः स्फूर्त अभिनय के माध्यम से होती थी, पर आधुनिक रंगमंच में सम्प्रेषण की निर्भरता यंत्र पर दिनोंदिन बढ़ने लगी है, जिसने सम्प्रेषण को दो मनुष्यों के बीच घटित होने वाली सहज मानवीय प्रक्रिया नहीं रहने दिया। नन्दकिशोर आचार्य लिखते हैं: "सम्प्रेषण- प्रक्रिया में मानवीय उपस्थिति एक अनिवार्यता रहती आयी है, लेकिन अब मानवीय उपस्थिति का स्थान यंत्र ने ले लिया है।... संप्रेषण के यंत्रीकृत होते चले जाने की प्रक्रिया ने संप्रेषण के रूप और प्रकार में भी परिवर्तन घटित किए हैं। यदि आज कलाकृति को एक रूपात्मक अनुभूति की बजाए डिस्कोर्स माना जाने लगा है तो यह कहीं- न- कहीं संप्रेषण प्रक्रिया में आये उन संरचनागत परिवर्तनों के भी कारण है, जिन्हें इस प्रक्रिया में यंत्र की उपस्थिति और सक्रिय हस्तक्षेप ने संभव किया है।

रंगमंच को सभी कला-प्रकारों का समन्वय कहा जा सकता है और इस नाते वह सभी कला- रूपों के उपकरणों में आये परिवर्तनों का भी इस्तेमाल करता है, लेकिन अन्य कला- रूपों और उसमें एक बुनियादी फर्क है- और यही वह चीज है जो रंगमंच को उस का विशिष्ट चरित्र देती है- कि उसका आधार सक्रिय मानवीय उपस्थिति है।" (नाट्यानुभव – नन्दकिशोर आचार्य, वाग्देवी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2004, वही, पृष्ठ 12)

वास्तव में, नाटक की सम्प्रेषण प्रक्रिया के केंद्र में जीवंत मनुष्य है। आज़ादी के बाद की रंगमंच की सक्रियता के बावजूद हमारे विद्यालय और विश्वविद्यालयों में नाटक के अध्यापन की कोई परम्परा नहीं बन सकी। हिंदी रंगमंच की उपलब्धियों से हमारे विश्वविद्यालय के अध्यापक उदासीन ही रहे और नाटक को संवादों पर आधारित कहानी मानकर कथावस्तु, संवाद और भाषा, देशकाल- वातावरण, चरित्र- चित्रण और उद्देश्य जैसे तथ्यों से व्याख्यायित करते रहे। 'नाटक कैसे पढ़ाया जाए' विषय पर कभी कोई चर्चा- परिचर्चा नहीं हुई। इस जड़ स्थिति के परिणामस्वरूप आज भी यह प्रश्न पूछे जाते हैं कि 'आषाढ़ का एक दिन' का नायक कौन है? अथवा वस्तु, नेता, रस के आधार पर किसी नाटक का विश्लेषण या प्रसाद के नाटकों की अभिनेयता पर विचार करें। इस हास्यास्पद स्थिति के पीछे वह मानसिकता है, जो अंतर्वस्तु और रूप को अलग- अलग मानकर चलती है।

इस तरह हम देखते हैं कि नाटक और रंगमंच एक- दूसरे से 'नाभिनाल – बद्ध' हैं और नाटक को इस तरह से पढ़ाया जाना चाहिए कि विद्यार्थी उसकी बहुलार्थक संभावनाओं से परिचित होने के साथ ही रंगमंच के तत्वों से भी जुड़कर नाटक की समग्र समझ विकसित कर पाये। यदि ऐसा हुआ तो नाटक का आने वाला भविष्य उज्जवल होगा।

**आभा गुप्ता ठाकुर**

हिन्दी विभाग, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका हैं।

# प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में नवाचार

उषा शर्मा

उषा शर्मा

भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति एवं विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक ए.पी.जे अब्दुल कलाम प्राथमिक शिक्षा को समाज और जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए बच्चों के रचनात्मक विकास को महत्वपूर्ण बताते हुए कहते हैं "रचनात्मकता सफलता की कुंजी है और प्राथमिक शिक्षा वह है जहाँ शिक्षक उस स्तर पर बच्चों में रचनात्मकता ला सकते हैं।"

बच्चों की रचनात्मकता उनकी तार्किक क्षमता को बढ़ावा देता है और उनका सर्वांगीण विकास करता है। लेकिन इस रचनात्मकता के लिए आवश्यक है शिक्षा का होना जिसकी शुरुआत प्राथमिक शालाओं से होती है।

भारत में प्राचीन काल में शिक्षा गुरुकुल में दी जाती थी, जहाँ गुरु विद्यार्थियों को उनकी क्षमता ,योग्यता एवं बौद्धिक सक्षमता के अनुरूप शिक्षा दिया करते थे। आज इस प्रकार की शिक्षा पद्धति नहीं है लेकिन विद्यालयी शिक्षा है, जिसमें बच्चे को भाषा ज्ञान के साथ- साथ सामाजिक ,विज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान आदि से समृद्ध किया जाता है। वर्तमान समय में प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में नवाचार की आवश्यकता महसूस की जा रही है। अब जानना है कि यह नवाचार क्या है? नवाचार का अर्थ है बदलाव लाना या सकारात्मक परिवर्तन लाना ताकि बच्चों में नवीनतम, कल्पनाशीलता, सर्जन करने की क्षमता, सोचने की क्षमता आदि का विकास हो। शिक्षा में नवाचार के अंतर्गत नयी तकनीकों का प्रयोग करना भी सम्मिलित है। पाठ्यक्रम में नवाचार का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चे उसे सहजता से ग्रहण कर सकें। यह सरल और उपयोगी हो जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो और उसमें शिक्षित होने के साथ- साथ सकारात्मकता उत्पन्न हो। शिक्षा और भाषा के ज्ञान के साथ उन्हें पर्यावरण, नैसर्गिक स्रोतों आदि के प्रति सजग करे और विद्यार्थियों को नैतिकता बोध और मानवीय मूल्यों के प्रति आकर्षित करे। एक अर्थ में पाठ्यक्रम में नवाचार शिक्षा को पहले से अधिक बेहतर करता है, उसमें नई तकनीक और जानकारियों को भी जोड़ता है जिससे बच्चों का मानसिक और मनोवैज्ञानिक विकास अच्छी तरह हो सके और शिक्षा के प्रति उसकी रुचि बढ़े।

जब हम प्राथमिक शिक्षण के पाठ्यक्रम में नवाचार की बात करते हैं तो हम देखते हैं कि प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों की उम्र पाँच से छह साल तक से लेकर तेरह, चौदह वर्ष की होती है। उन बच्चों के लिए भाषा शिक्षण मातृभाषा में ही होना श्रेयस्कर है क्योंकि मातृभाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा प्रभावकारी और सहज ग्राह्य होती है इसलिए कि वह हमारे अभिव्यक्ति का माध्यम है। लेकिन उन देशों में जहाँ भारतीय बच्चे अपनी मातृभाषा से अधिक परिचित नहीं हो पाते वहाँ हिंदी शिक्षण एक चुनौती ही है। यहाँ पाठ्यक्रम बनाते समय यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि बच्चों को हिंदी सिखाने के क्या-क्या साधन होने चाहिए? हिंदी शिक्षक को ऐसे कौन से साधनों का उपयोग करना चाहिए जिससे बच्चे उसकी बात को या पाठ्यक्रम को समझ सकने में सक्षम हों। विद्यालय में उसको किस तरह का वातावरण दिया जाय जिससे उसको भाषा सीखने में सहायता मिले और वह उसे उबाऊ और अनुपयोगी न लगे। इन्हीं चुनौतियों को स्वीकारते हुए प्राथमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम विशेष रूप से हिंदी शिक्षण के क्षेत्र में नवाचार करने की आवश्यकता है।

- अधिकांश कक्षाओं में विद्यार्थियों को कम बोलने की सलाह दी जाती है जबकि हमें बच्चों को समूहों में बांटकर उन्हें बातचीत के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जिससे उनके बोलने, सुनने और समझने की शक्ति का विकास होगा और बोलने का संकोच भी दूर होगा।

- स्कूलों में शिक्षा पाठ्य पुस्तकों पर आधारित होती है। शिक्षक उन्हें पढ़ने के लिए कहते हैं जिसमें से अधिकतर बच्चे संकोचवश पढ़ने में आनाकानी करते हैं या फिर बिना समझे -बूझे पाठ को पढ़ते चले जाते हैं जिससे यह एक उबाऊ प्रक्रिया बन जाती है। इसलिए नवाचार के अंतर्गत शिक्षक को उन्हें कक्षा में उनके स्वयं के परिचय के लिए बोलने का अवसर देना चाहिए। बच्चे के लिए बोलने की यह आसान प्रक्रिया होगी और रोचक भी।

- कक्षा के अंदर ही तरह- तरह के खेलों के माध्यम से उन्हें भाषायी ज्ञान दिया जा सकता है जैसे हम भिन्न अक्षरों की पर्चियां बनाकर उन्हें दें और उन्हीं अक्षरों से शुरु होने वाले शब्दों को बच्चा बोलकर लिखकर या संकेतों के माध्यम से बताएं इससे अधिक से अधिक शब्द वह सीख पायेगा और उसकी सोचने की क्षमता के साथ कल्पनाशीलता का भी विकास होगा।

- इसी प्रकार हम गीतों, लोरियों, लघु नाटकों कहानियों, कविताओं, आकृतियों, फोटो, नृत्य ,चित्रों आदि नवाचारी माध्यमों से उनको शिक्षित कर सकते हैं जिससे उनमें नैतिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक विकास होगा और संपूर्ण विश्व के कल्याण की भावना का प्रस्फुटन होगा।

# ग़ैर-भारतीय विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण

**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा**

हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्यापन भारत के बाहर अनेक देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में किया जा रहा है। विदेशों में हिन्दी के अध्ययन में दो प्रकार के विद्यार्थी संलग्न पाए जाते हैं। एक तो वे जो विधिवत प्रमाण पत्र प्राप्त करना चाहते हैं और दूसरे वे जो केवल हिन्दी भाषा को जानने और समझने में रुचि रखते हैं। वे प्रमाण पत्र प्राप्त करने के उद्देश्य से अध्ययन नहीं करते हैं। इन दोनों प्रकार के विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने के लिए हिन्दी शिक्षण में आधुनिक शैलियों और नई तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिए। इससे न केवल अध्ययन के प्रति उनकी रुचि जागृत होगी बल्कि ग्राह्यता के स्तर पर भी उन्हें तीव्रगामी परिवर्तन देखने को मिलेगा। हिन्दी विषय के उच्च स्तरीय शिक्षण अर्थात स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्यापन करते समय आरंभिक व्याकरण, वर्तनी का सही उच्चारण और साहित्य की विविध विधाओं को सम्मिलित करते हुए यथासंभव एनिमेशन, चित्रावली प्रदर्शन,पावर प्वाइंट प्रस्तुति, लघु टेलीफिल्म और दृश्य श्रव्य व्याख्यानों का व्यवहार किया जाना अपेक्षित है। पर्यटन से संबंधित लघु वृत्तचित्र भी इस दिशा में सहायक हो सकते हैं। पत्रिकाओं और अखबारों की सहायता लेकर भी इस पाठ्यक्रम को रोचक बनाया जा सकता है।

मातृभाषा और किसी विदेशी भाषा के अध्ययन में मूल अंतर यह है कि मातृभाषा के मामले में हम पहले बोलना शुरू करते हैं, फिर समझना, लिखना और पढ़ना शुरू करते हैं लेकिन जब हम कोई विदेशी भाषा सीखना शुरू करते हैं तो एक साथ लिखते, पढ़ते, बोलते और समझते हैं। जब भी कोई विदेशी भाषा सिखाना या सीखना शुरू करता है तो उसके लिए चार पहलू आवश्यक होते हैं।

1. सुन कर समझना 2. भाषण के माध्यम से अभिव्यक्त करना 3. पढ़ कर समझना 4. उस भाषा में लिख कर समझना।

यद्यपि इन चारों में पारंगत होना अनिवार्य नहीं है। आज छात्र अपनी आवश्यकता के अनुसार एक, दो, तीन या चारों पहलुओं का चयन करते हैं। मैंने भाषा शिक्षण करते समय पाया कि जो घटक महत्वपूर्ण हैं वे हैं लिपि, व्याकरण, शब्दावली, व्यावहारिक वाक्य, अभिव्यक्ति का तरीका, प्रतीकात्मक शब्दों का अर्थ, संस्कृति और परंपरा का ज्ञान आदि।

हिंदी शिक्षण की कुछ मुख्य चुनौतियाँ भी हैं। जैसे: लेखन से संबंधित, भाषण से संबंधित, व्याकरण से संबंधित, अभिव्यक्ति से संबंधित, परिवेश से संबंधित और संस्कृति से संबंधित आदि। जब हम किसी पाठ की शुरुआत करते हैं, तो उसमें दो घटक मुख्य होते हैं - प्रतीक और भाषण। हिंदी भाषा में सभी अक्षर और उनके उच्चारण सुनिश्चित किए गए हैं। हम जैसा बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति उच्चारण के वास्तविक स्थान को वैज्ञानिक रूप से जानता है तो वह कभी गलत उच्चारण नहीं करेगा। मैंने विदेश में अध्यापन करते समय पाया कि विदेशी छात्र नासिक्य ध्वनियाँ अनुस्वार और अनुनासिक बोलते हुए सहज नहीं हैं। जैसे चंद्र और चांद अथवा हंस और हँस। आजकल सरलता की दृष्टि से केवल अनुस्वार का उपयोग किया जा रहा है। एक और समस्या पंचम वर्ण की है। अब हिंदी में केवल पंचम स्वर के स्थान पर अनुस्वार का उपयोग हो रहा है। इसी प्रकार विदेशी छात्रों को पांच प्रकार के आर भ्रमित करते हैं। यह समस्या अभ्यास के माध्यम से दूर की जा सकती है। इसके अलावा तीन श का उच्चारण भी भ्रम पैदा करता है। लिखने में वे अक्षर अलग-अलग होते हैं लेकिन वाणी में दो की आवाज एक जैसी होती है। भारत में भी यह एक आम समस्या है।

ग़ैर-भारतीय के लिए हिंदी की शब्दावली को याद रखना भी एक चुनौती है। इसमें बहुत समय लगता है। पर्यायवाची, विलोम, कई अर्थों वाले एक शब्द, मुहावरे और नए बनाए गए शब्द हमेशा चुनौती पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए पत्नी के लिए हिंदी में कई शब्द हैं। एक नजर डालें -, बहू, वधू, तिय, बन्नो, बन्नी, प्रिया, दारा, नारी, वामा, भार्या, जाया, कांता, जोरू, पत्नी, लुगाई, औरत, सजनी, वनिता, गृहिणी, जनाना, तिरिया, श्रीमती, संगिनी, दुलहन, सहचरी, घरवाली, प्राणेश्वरी, वामांगना, धर्मपत्नी, परिणीता, हृदयेश्वरी, गृहलक्ष्मी, प्राणप्रिया, अर्धांगिनी, वामांगिनी, सहधर्मिणी,सहगामिनी, गृहस्वामिनी, प्राणवल्लभा, जीवन संगिनी आदि। यह बात वैसे तो हिंदी की समृद्धि को दर्शाती है किंतु इन्हें याद रखना भी एक चुनौती है।

एक उदाहरण है - सीता राम की पत्नी हैं। यहाँ सीता एकवचन हैं  लेकिन यहाँ हैं का उपयोग किया गया है क्योंकि वे बहुत सम्मानित हैं। इसी तरह जब कुछ भक्त ईश्वर को बुलाते हैं तो वे कहते है, भगवान, तुम कुछ करते क्यों नहीं। यहां तुम का उपयोग किया जाता है क्योंकि भक्तों को लगता है कि वे भगवान के बहुत करीब हैं। एक और उदाहरण बाप शब्द से संबंधित है। बाप का अर्थ है पिता लेकिन यह कहना सही नहीं है कि वह मेरा बाप है, इसके बजाए सही वाक्य है कि वे मेरे पिता हैं । इसके अलावा बाप रे बाप और बाप रे अलग अलग अभिव्यक्तियां हैं।

यदि एक शिक्षक जो किसी विदेशी को हिंदी सिखा रहा है, तो कभी-कभी सांस्कृतिक और पौराणिक पहलुओं से अपरिचित होने के कारण भी शिक्षण में समस्या का सामना करना पड़ता है। साहित्यिक पाठ पर चर्चा करते समय यह समस्या विशेष रूप से कठिनाई पैदा करती है। जैसे पंच परमेष्वर, तीसरी कसम, गोदान, असाध्य वीणा जैसी रचनाएं अलग अलग संदर्भों से भरी हुई हैं। जोहान एमोस कॉमेनियस जो एक चेक दार्शनिक, शिक्षाविद और धर्मशास्त्री थे और जिन्हें आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है, ने इस बात पर जोर दिया कि शुरुआत में चित्रों की मदद से शिक्षा दी जानी चाहिए। इसलिए कक्षा में शिक्षक को भाषा सिखाते समय इन शैलियों और तकनीकों को अपनाना चाहिए। मुझे अपने अनुभव के अनुसार जो कुछ बिंदु महत्वपूर्ण लगे वे इस प्रकार हैं:

- उच्च पिच में लेकिन धीरे-धीरे पढ़ें। स्पष्ट रूप से उच्चारण करें।
- कक्षा और व्याख्यानों में कहानी का व्यवहार करें। चित्रों और चार्टों की मदद लें।
- प्रतीकों के अर्थ स्पष्ट करें।
- छोटे पैराग्राफ या कविता का अनुवाद करने के लिए छात्रों को प्रेरित करें। हिंदी भाषा में और छात्रों की मातृभाषा में एक से संदर्भ खोजने की कोशिश करें।
- बच्चों के साहित्य की छोटी कविताओं और कहानियों की मदद लें।
- उन्हें ऑडियो सुनने और बॉलीवुड गानों के वीडियो देखने को दें। उदाहरण के लिए फिल्मी गीत मेरा जूता है जापानी का वीडियो दिखाएं।
- वृत्तचित्र, लघु फिल्में और यदि संभव हो तो फीचर फिल्में दिखाएं।
- आज की खबर या हिंदी की किसी भी घटना पर उन्हें बोलने के लिए कहें।

एक शिक्षक को एक दूसरे देश में हिंदी सिखाते समय हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि उसे क्या करना चाहिए छोटे वाक्यों का प्रयोग करें, हमेशा स्थानीय जीवन से संदर्भों का चयन करें, उनके भोजन, त्योहारों, संस्कृति, वास्तुकला, लेखकों आदि के बारे में चर्चा करें, अपने छात्रों को आसान से कठिन तक ले जाने की कोशिश करें,मल्टी मीडिया का उपयोग सहायक हो सकता है।

**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा**
काशी हिंदू विश्वविद्यालय में यू.जी.सी- मानव संसाधन विकास केंद्र के निदेशक हैं।

# अनुवाद के क्षेत्र में 'कृत्रिम बुद्धि' का उपयोग

**प्रो. रेखा सेठी और अनूप भार्गव**

इंटरनेट के उत्तरोत्तर विकास से भाषाओं को बल मिला है। 'लैंग्वेज लैब' आदि की व्यवस्था से, तकनीक के सहारे भाषा का शिक्षण व अधिगम, दोनों ही सरल हुए हैं। खत्म होती हुई भाषाओं को बचाने में इंटरनेट का महत्वपूर्ण योगदान है। भाषाओं के बीच परस्पर संवाद में भी वृद्धि हुई है। दूसरी चिंता, तकनीक के आतंक में मानविकी विषयों को बचाए रखने की थी। लेकिन उस दृष्टि से भी देखा जाए तो पिछले पच्चीस वर्षों में मानविकी विषयों का प्रचार-प्रसार, साहित्यिक गतिविधियाँ, इंटरनेट पर साहित्य से जुड़ी सामग्री दिनों दिन बढ़ती गई है। आज हम इंटरनेट के बिना अध्ययन अध्यापन के विषय में सोच भी नहीं सकते। विद्यार्थियों के लिए तो जैसे इंटरनेट ने उनकी कल्पना को पंख दे दिए हैं। आज, कृत्रिम बुद्धि या प्रज्ञा जिसका उपयोग हम 'आर्टिफिशल इन्टेलिजन्स' के पर्याय के रूप में कर रहे हैं उससे जुड़े सवाल उपरोक्त परिदृश्य जैसे ही हैं। अटकलें लगाई जा रही हैं कि उसके व्यापक प्रयोग से रोज़गार के अवसर कम हो जाएँगे। आपसी संवाद में ह्यूमन इन्टरफेस समाप्त हो जाएगा आदि। अपने पिछले अनुभवों से हम जानते हैं कि यह सही नहीं है। मशीन और मनुष्य मिलकर कार्य-प्रणालियों को सुगम बनाएँगे। कम समय में अधिक काम हो पाएगा और भी न जाने कितनी दिशाएँ उजागर होंगी।

ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ती भूमिका है। शिक्षा, प्रशासन, सामाजिक-सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दुनिया से लेकर मीडिया, ब्लॉग व ट्रैवल-टूरिज्म के क्षेत्र तक अनुवाद का हमारे जीवन तथा अध्ययन में सक्रिय हस्तक्षेप है जो उत्तरोत्तर अन्य क्षेत्रों में भी अपनी पैठ बढ़ा रहा है। आज किसी भी देश की यात्रा करने पर अपने साधारण आचरण या संवाद के लिए हमें दुभाषिए की ज़रूरत नहीं। गूगल ट्रांसलेट के माध्यम से हम काम चलाऊ बातचीत का सिलसिला जारी रख सकते हैं। सोशल मीडिया और ब्लॉग में एक बटन दबाते ही मिनटों में वह जानकारी हमें मात्र एक भाषा से दूसरी भाषा में नहीं, अनेक भाषाओं में उपलब्ध हो सकती है। इससे हमारे संवाद और समझ का दायरा बढ़ता है। यह ज्ञान के लोकतंत्र का समय है यानी उच्च शिक्षा तथा ज्ञान-विज्ञान भाषाओं की सीमाओं में बंधा नहीं है। कोई भी अपनी भाषा में काफी सीमा तक उपलब्ध ज्ञान को अर्जित कर सकता है।

यह तर्क दिया जाता है कि यह जानकारी हमारी वाक्य संरचना के अनुकूल नहीं है, न ही वह पूरी तरह हर भाषा के भाषिक संयोजन के अनुरूप हो सकती है। साहित्यिक तथा सांस्कृतिक अनुवाद में तो यह समस्या और भी बड़ी है क्योंकि वहाँ भाषा के अभिधात्मक अर्थ के अतिरिक्त व्यंजनात्मक अर्थ भी रहता है और कथ्य के साथ-साथ शैली की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वहाँ भाषा मात्र साधन नहीं, साध्य भी है। एक लेखक भाषा का प्रयोग ही नहीं करता, वह भाषा से भी प्रयोग करता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो मशीनी अनुवाद या कृत्रिम बुद्धिजनित अनुवाद अनेक समस्याएँ उत्पन्न करता है। लेकिन ऐसा होने पर भी तकनीकी से प्रेरित एवं उस पर आश्रित युग में, अनुवाद की इस प्रक्रिया को प्रयोग के दायरे से हटाकर केवल मानवीय अनुवाद पर ही भरोसा करना अदूरदर्शिता का पर्याय होगा। आज के उत्तर-आधुनिक समय में सूचना और संचार की क्रांति के बाद जिस द्रुत गति से तकनीक में परिवर्तन हो रहे हैं, उससे इस दिशा में अनुवाद के विकास की अपार संभावनाओं के प्रति आश्वस्ति का भाव जागता है।

कंप्यूटर केवल शब्दों और वाक्य संरचनाओं के पैटर्न पहचानता है। जिस भाषा का जितना अधिक डेटा इंटरनेट पर उपलब्ध होगा उसके द्वारा किया गया मशीनी अनुवाद उतना ही सही होगा। यदि कुछ वर्ष पहले के मशीनी अनुवाद से आज प्राप्त होने वाले अनुवादों की तुलना करें तो अनुमानत: जो परिणाम दस या बीस प्रतिशत तक सही आते थे और अनूदित भाषा की वाक्य संरचनाओं के अनुकूल थे, वे अब प्रचलित भाषाओं में लगभग सत्तर प्रतिशत तक सही माने जा सकते हैं। विशेष तौर पर आम बोलचाल के छोटे-छोटे वाक्य मशीनी अनुवाद में सही परिणाम दे रहे हैं।

कृत्रिम बुद्धिजनित अनुवाद, अनुवाद की पूरी प्रक्रिया में प्राथमिक उपकरण के समान है। मशीनी अनुवाद को सही करने के लिए विश्व-भर में कई तकनीकें अपनाई जा रही हैं। जैसे कुछ 'कंप्यूटर एडिट टूल' हैं यानी अनूदित सामग्री को भाषा के किन्हीं और उपकरणों के माध्यम से सही किया जा सकता है। अंग्रेज़ी में ग्रामरली ऐसा ही एक सॉफ्टवेयर है जो भाषा की व्याकरणिक असंगतियों को शुद्ध कर सकता है। यह सब कार्य 'पोस्ट एडिटिंग' यानी बाद में किया जाने वाला संपादन है। यह संपादन निश्चित तौर पर मानवीय हस्तक्षेप के स्तर पर ही होगा। लक्ष्य भाषा और स्रोत भाषा के जानकार द्वारा ही इस प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया जाता है लेकिन इतना अवश्य है कि परंपरागत अनुवाद प्रणालियों की अपेक्षा इस प्रक्रिया को अपनाने से अनुवादक का श्रम कई गुणा कम हो जाता है। साहित्य तथा सांस्कृतिक अनुवाद के क्षेत्र में यह संपादन थोड़ा और जटिलतर होगा क्योंकि मात्र शाब्दिक या भावानुवाद काफी नहीं होगा। अनुवादक की यह कोशिश रहती है कि वह लेखक की शैली का भी कुछ प्रतिबिंब प्रस्तुत कर सके। यद्यपि इस बिंदु पर भी एकमत नहीं हुआ जा सकता। बहुत से अनुवादक लक्ष्य भाषा में पठनीयता को संभव बनाने के लिए शैली से कुछ सीमा तक समझौता करते हैं। उनके अनुसार अर्थ संप्रेषण प्रमुख है और उनका प्रयास रहता है कि पाठक दूसरी भाषा के लेखक को भी अपनी भाषा के लेखक के अनुरूप की पढ़े जिससे अनूदित लेखक को लक्ष्य भाषा की साहित्यिक परंपरा के अंतर्गत देखा जा सके। अनुवाद की पारिभाषिक शब्दावली में यह 'फ्रीडम एंड फिडेलिटी' का द्वन्द्व है यानी 'स्वतंत्रता या निष्ठा'। जिस तरह हमारे दैनिक जीवन व  आचरण में कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है उससे यह विश्वास होता है कि अनुवाद के क्षेत्र में भी, कुछ ही वर्षों में कृत्रिम बुद्धि के प्रयोग के आश्चर्यजनक रूप से संभावनापूर्ण परिणाम निकलेंगे। साहित्यिक-सामाजिक क्षेत्र में यह चौंकाने वाले और क्रांतिकारी होंगे। हम इसकी सहायता से एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कर जाएँगे जहाँ भाषा की सीमाएँ नहीं होंगी। तकनीक भाषाओं के एक नए लोकतंत्र को जन्म देगी।

**प्रो. रेखा सेठी**
इंद्रप्रस्थ कॉलेज, दिल्ली में कार्यरत प्राध्यापिका हैं और अनूप भार्गव
न्यू जर्सी में कार्यरत कवि हैं।

## हिंदी और गुजराती: कितने दूर, कितने पास

**प्रो. दीपेंद्र सिंह जाडेजा**

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा संस्कृत के एक ही समान स्त्रोत से निष्पन्न होते हुए भी हिंदी - गुजराती उभय भाषाएँ अपनी व्याकरणिक संरचना में अर्थात् अपनी आंतरिक गठनात्मक प्रकृति में, आज न केवल अपनी जननी संस्कृत से बल्कि एक दूसरे से भी काफी दूर चली गई है। यह सच होने के बावजूद दोनों भाषा में साम्यता भी है। इन चार बिन्दुओं के माध्यम से साम्यता को देखेंगे। शब्द संपदा; वाक्य रचना; मुहावरे; कहावतें।

शब्द संपदा: दोनों भाषाओं में संस्कृत तत्सम शब्दों की भरमार है। जैसे : नीति, भक्ति, धर्म, प्रजा। अर्थात् दोनों में से एक भाषा का जानकार दूसरी भाषा में बोले जाते इन शब्दों को सरलता से समझ सकता है। संस्कृत तद्भव शब्दों का प्रचलन भी दोनों भाषाओं में एक समान मिलता है, जिसकी संख्या बहुत है। जैसे: हाथ, नाक, दांत, घर। अगर भिन्नता है भी तो आसानी से समझा जा सकता है। जैसे: पहुँचना - पहोंचवुं (પહોંચવું) अरबी, फारसी शब्दों का प्रचलन सभी भारतीय भाषाओं में मिलता है। हिंदी और गुजराती में यह शुद्ध स्वरूप में प्रयोग होते है। जैसे: जरूर (જરૂર), जरा (જરા) होश (હોશ), खबर (ખબર)

वाक्य रचना: हिंदी और गुजराती भाषाओं में वाक्य- रचना में काफी साम्यता हैं। दोनों भाषाओं में अन्विति का क्रम: कर्ता, कर्म और क्रिया के रूप में है। जैसे: मोहन पुस्तक पढ़ता है। (मोहन चोपडी वांचे छे) काल वाचक या स्थान वाचक पद कर्ता के बाद में आता है। जैसे: मोहन कल पाठ पढ़ता था - (मोहन काले पाठ वांचतो हतो) मोहन घर में बात करता था - (मोहन घरमां वात करतो हतो)। अगर एक ही वाक्य में दोनों प्रकार के पद आते हैं, तो अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे: कल मोहन घर पर न था - (काले मोहन घेर नहोतो), मोहन कल घर पर न था- (मोहन काले घेर नहोतो)

मुहावरे: मुहावरे हर एक भाषा की अपनी विशेष पहचान होते हैं। न उसका अनुवाद हो सकता है न ही उसके बदले दूसरा शब्द रखा जा सकता है। फिर भी हिंदी और गुजराती मुहावरों में बहुत सी साम्यता है। यहाँ हम 'आ' से प्रारंभ होनेवाले मुहावरे देखेंगे: आँखें खुलना (आँख खुलवी), आँखों में धूल डालना (आँखमां धूळ नाखवी), आँख फड़कना ( आँख फरकवी), आँखें भर आना (आँख भराई आववी)

कहावतें: हिंदी की बहुत सी कहावतें गुजराती में वैसे ही प्रचलित है या उसके अर्थ को आसानी से समझा जा सकता है। उदाहरण: अंधों में काना राजा, अंधेर नगरी चौपट राजा, उलटा चोर कोतवाल को डाँटे, मन चंगा तो कठौती में गंगा, अकल बड़ी की भैंस,

असमानता (भेद तत्व): उपरोक्त समानता के बावजूद दोनों भाषाओं के बीच कई असमानताएँ भी है। प्रत्येक भाषा में इतनी विविधता होती है कि यदि हमें उस भाषा का अध्ययन करना हैं, तो गंभीरता से करना चाहिए। दोनों भाषाओं के भेदक तत्वों को इन मुद्धों से समझेंगे।

* वर्णमाला और उच्चारण: गुजराती और नागरी वर्णमाला लगभग एक है। इन देवनागरी अक्षरों से गुजराती इतने परिचित है कि कुछ कहने की जरूरत नहीं। हिंदी देवनागरी की शिरोरेखा को छोड़ दिया जाय तो ज्यादतर समानता ही है। जैसे: त, थ, न, म, प, य, र, व, स, श,ष, ह, ट, ड, ढ़, घ, ध,ग अर्थात् शिरोखा दे दिया तो हिंदी अन्यथा गुजराती हो जायेगा।

* नुक्तायुक्त व्यंजन : हिंदी में क, ख, ग, ड, ढ,फ वर्णों का उच्चारण दो तरीके से होता है। इसमें क, ख, ग, फ, गुजराती में भी है। हिंदी में इसको अलग लिखने के लिए वर्णों के नीचे नुक्ता रखा जाता है। इसलिए उसके उच्चारण में दूसरी भाषा वालों को कठिनाई नहीं होती। किन्तु लिखते समय यह प्रश्न सदैव बना रहता है कि नुक्ता रखना हैं कि नहीं।

* ज़, ड, ड़, ढ, ढ़ के बारे में:- 'ज़' का उच्चारण गुजराती में 'ग्न' जैसा तथा हिंदी में 'गिय' या 'ग्य' जैसा करते है। 'आज़ा' का हिंदी उच्चारण 'आगिया' तथा ज्ञान का 'गियान' - 'ग्यान' जैसा होता है। किन्तु गुजराती भाषी 'ज्ञान' को 'गनान' बोलते है, क्योंकि गुजराती में ऐसा बोलने की आदत है। जबकि इस शब्द को लिखते सही हैं।

* वर्तनी के आधार पर :- दोनों भाषाओं में बहुत से वर्ण एक जैसे लिखे जाते हैं, यह हमने देखा। किन्तु वर्तनी के नियमों के कारण शब्दों को दोनों भाषाओं में अलग-अलग लिखा जाता है। जैसे: हिन्दू - हिंदु | इसलिए जब हिंदी लिखते हैं, तो यह स्वाभाविक है कि गुजराती भाषी उन शब्दों को वैसे ही लिखते हैं। जैसे वे गुजराती में लिखे जाते हैं। अत: ऐसे शब्दों पर विशेष ध्यान देना और उनकी हिंदी वर्तनी को याद रखना जरूरी है।

* एक शब्द की वर्तनी में गुजराती छात्र अक्सर गलती करते है। हिंदी के 'नहीं' को गुजराती में दो तरह से लिखा जाता है "नहीं" और 'नहि'। हिंदी में केवल 'नहीं' लिखा जाता है। हिंदी में 'ऐ' का उच्चारण 'ऍ' 'होता है और 'औ' का उच्चारण 'ऑ' अर्थात् 'ऍ' के बदले 'ऐ' तथा 'ऑ' के बदले 'औ' लिखा जाता है। जबकि यही 'अे 'એ' तथा 'ओ' 'ઓ' वाले शब्द हिंदी में लिखते समय दो मात्राओं का प्रयोग किया जाता है। जैसे: नौकर (નોકર), मौसम (मोसम), कौन (કોણ)

अर्थ के आधार पर : एक ही शब्द कई बार हिंदी और गुजराती में अलग- अलग अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। अतः गुजराती में प्रचलित शब्द हिंदी में उसी रूप में लिखने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे: गुजराती के 'चप्पू' का अर्थ हिंदी में 'चाकू' होता है, जबकि 'चप्पू' हिंदी में नाँव खेने के साधन के रूप में प्रयुक्त होता है।

लिंग भेद: हिंदी और गुजराती में आप किसी भी शब्द का प्रयोग करें आपको उस शब्द के लिंग का निर्णय करना ही पड़ेगा। हिंदी में दो लिंग हैं, गुजराती में तीन, पुलिंग, स्त्रीलिंग, और नपुंसक लिंग |'गुजराती में पुल्लिंग हिंदी में स्त्री लिंग': अग्नि, आत्मा, आवाज, देह, निधि, महिमा, वायु, विजय, साँस, कसम। गुजराती स्त्री लिंग हिंदी में पुकिंग:असर, चर्चा, मौसम, निकाश, बाजार, मजा, व्यक्ति, संदूक। इसके अलावा प्रत्यय का नियम, अन्वित का नियम और भी बहुत कुछ है, जो दोनों भाषा परंपरा की भिन्नता को दर्शाते है।

**प्रो. दीपेंद्र सिंह जाडेजा**
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा, वड़ोदरा, में हिंदी प्राध्यापक हैं।

# हिंदी भाषा शिक्षण में प्रौद्योगिकी

**सागर देसले**

**सागर देसले**

भाषा एक संवेदनशील और संरचित तरीके से भावों, विचारों, और ज्ञान को संचयित करने और संवर्धित करने के लिए उपयोग की जानेवाली विशेष संकेत-सीमित संकेत व्यवस्था होती है। इसका उपयोग व्यक्तियों के बीच संवाद की स्थापना, संबोधन, संवाद, और ज्ञान को साझा करने के लिए होता है। भाषा शब्दों, वाक्यों, और विचारों के माध्यम से अभिव्यक्ति करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इस से मानवीय संबंध, संस्कृति, और ज्ञान का संचय होता है। विभिन्न भाषाएं विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों में विकसित होती हैं और लोगों के बीच संवाद को संभव बनाती हैं।

"समाज वैज्ञानिकों का मानना है कि भाषा का विकास सामाजिक अंतः क्रिया द्वारा होता है। इस तरह भाषा मनुष्य के विकास की आधार शिला है। भाषा शब्द 'भाष्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'बोलना'। अतः भाषा में बोलना समाहित है। हम अपने आस- पास के लोगों के लिए बोलकर विचार प्रकट करते हैं और दूर के लोगों के लिए लिखकर विचार प्रकट करते हैं। इस तरह भाषा में बोलना व लिखना दोनों समाहित है।"

कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में काम करता हो, चाहे शिक्षण, चाहे कोई फैक्ट्री, चाहे कोई उद्योग उसे कुछ-न-कुछ सीखने की आवश्यकता पड़ती है।" शिक्षण में और विशेष रूप से भाषा शिक्षण में सहायक सामग्री का अलग महत्त्व है। भाषा-शिक्षण को सहज और सरल, साथ ही उन्नत करने में सहायता पहुंचाने वाली सामग्री को 'सहायक सामग्री' की संज्ञा दी जाती है। किसीको भी मात्र वर्णन तथा विवेचन से दी जानेवाली शिक्षा सफल नहीं होती जितनी सहायक सामग्री के माध्यम से। यही कारण है कि आज शिक्षण-विधि को प्रभावित तथा सजीव बनाने के लिए दृश्य-श्रव्य उपकरणों की आवश्यकता का अनुभव तेज़ी से किया जाने लगा है।

पिछले एक दशक से भारत सरकार ने हिंदी भाषा एवं हिंदी के विकास के लिए पूरी दुनिया में बढ़-चढ़कर अनेक कार्यक्रम एवं नई घोषणाएं की है। जिसमें सरकार के सारे मंत्रालय की वेबसाइट में हिंदी भाषा का विकल्प दिया गया है इसके पश्चात अनेक अनुवाद के सॉफ्टवेयर विकसित किए गए हैं जिसमें अनुवादिनी उनमें से एक है। हिंदी भाषा के अनेक एप्स विकसित किए गए हैं,जो हिंदी शिक्षण को समझने का अवसर प्रदान करेंगे तथा ई- प्रभा, ई-पुस्तकालय जैसे माध्यम से गांव-गांव में लोगों तक शिक्षा पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही वैश्विक पटल पर हिंदी को दुनिया की अन्य भाषाओं से जोड़ा गया है।

वेबप्राक:
यह ऐसा साधन है जिसकी सहायता से देवनागरी और अन्य भारतीय भाषाओं में कार्य किया जा सकता है। इसमें इंट्रानेट तथा इंटरनेट से लाभ उठाया जा सकता है। राज भाषा डॉटकॉम:- इसमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि शब्दकोश, ई-मेल, इंटरनेट की सुविधा के अतिरिक्त ऑनलाइन (Online) हिंदी-शिक्षण भी संभव है। अनेक प्रकार के सोफ्टवेयर न की विस्तृत सूचना निदेशक (तकनीकी), राज भाषा विभाग, द्वितीय तल, बीविंग, लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 से प्राप्त की जा सकती है सागर देसले बड़ोदा *(गुजरात)* में शिक्षण में कार्यरत हैं।

## Integrated Performance Assessment

**By Sushma Malhotra**

Assessment determines whether or not the goals of education are being met. Assessment cannot happen in isolation. It must be an integrated assessment of all the communicative modes with performance by the students. That is commonly called Integrated Performance Assessment (IPA), a cluster assessment featuring three modes of communication--Interpretive, Interpersonal and Presentational as defined by the ACTFL World-Readiness Standards for Learning Languages connected by a central theme.

Assessment affects decisions about grades, placement, advancement, instructional needs, curriculum, and, in some cases, funding the education. Language assessment at any grade or at any proficiency level should always be integrated and not be in isolation.

After selecting the assessment tools we need to decide the principles of performance assessment. The principles include: **A**ccountability, Performance-Based Assessment, Evidence-Based Assessment, Validity and Reliability in Assessment and Participation and Collaboration.

Before conducting any assessment teachers think about the learning outcomes and proficiency targets of the unit or course and authentic and appropriate tasks for students. Teachers select an authentic text to be read, listened to, or watched by students and design interpretive tasks and overall context for the Integrated Performance Assessment. Inorder to conduct an Interpretive assessment teacher can ask students to answer comprehension questions based on something they read, listened, or watched.

Then design interpersonal tasks paired with discussion of the text which can be done with a peer or partner using various strategies. During the Interpersonal task the teacher goes around listening to their oral proficiency and gives them feedback. Interpersonal tasks are followed by presentational tasks. Presentational tasks can be oral or written based on the content and the context of the unit. Students can write essays based on a synthesis of information gathered when completing previous tasks. For presentational tasks students can present orally or share the written assignment.

In IPA all communicative tasks, Interpretive, Interpersonal, and Presentational, need to be graded separately using various rubrics for formal and informal assessments. Rubric helps to assess and modify instruction during all modes of communication. In an IPA, each task provides information and elicits language interaction needed for the next tasks. Students are given feedback after each task which helps them prepare for the rest of the assessment, typically using scoring rubrics that rate how well the performance met expectations. Teachers have to be cautious to see that each task builds upon previous tasks. There needs to be ongoing feedback and plan how and when the teacher will provide feedback during and after the assessment.

The World Language New York City and New York State examinations assess language in all modalities: speaking, listening, reading, and writing aligned to the ACTFL World-Readiness Standards for Learning Languages as well. IPAs therefore provide educators with valuable information about students' communicative abilities across modes and incorporate continuous opportunities for feedback and improvement.

Sushma Malhotra is an Adjunct Lecturer, in the Secondary Education, Youth Services, Department of World Languages, Queens College, City University, New York. She started her career as a teacher and moved on to become an Assistant Principal with the New York City Department of Education. She earned her Masters of Arts in English and Masters in Education, from India and a Masters of Science in Education from City College, City University of New York, and Diploma in School Administration and Supervision from Queens College, City University of New York, New York. She received STARTALK Federal grants from 2008 to 2019 to teach Hindi as one ofthe critical languages.

# आधुनिक हिंदी पाठ्यक्रम और परम्परागत भारतीय जीवन

**ममता त्रिपाठी, पैट्रिका सबरवाल, नीना सरीन और अनुभूति काबरा**

अमरीकी शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित फुलब्राइट-हेस ग्रुप प्रोजेक्ट अब्रॉड का उद्देश्य आधुनिक वैश्विक भाषाओं तथा अन्य संबन्धित विषयों के अध्ययन के लिए मूल सांस्कृतिक परिवेश का गहन संदर्भ प्रदान करना है। युवा हिन्दी संस्थान-फुलब्राइट-हेस ग्रुप प्रोजेक्ट अब्रॉड 2022 कार्यक्रम के हिन्दी पाठ्यक्रम विकास मण्डल में विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक, शिक्षक, स्कूलों के प्रशासक, तथा विश्वविद्यालयों के छात्र शामिल थे। इस दल ने ग्रामीण और अल्पसंख्यक समुदायों में स्थायी प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हिंदी में पाठ्यक्रम विकास के लिए संसाधन हासिल करने के लिए भारत में चार सप्ताह बिताए। इस शिक्षण एवं अनुसंधान यात्रा के दौरान कई ऑडियो-वीडियो संसाधन, आख्यान और किताबें एकत्रित की गई। इन प्रामाणिक संसाधनों का उपयोग हिन्दी शिक्षण की सामग्री विकसित करने के लिए किया गया। अब यहाँ पर यह सवाल उठता है कि दल ने विशेष रूप से ग्रामीण और अल्प संख्यक समुदायों की जीवनशैली को शामिल करने वाले समावेशी पाठ्यक्रम को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित क्यों किया?

भारतीय संस्कृति की बहुआयामी सांस्कृतिक विविधता में ही पारंपरिक ज्ञान भी अंतर्निहित है। स्वदेशी, ग्रामीण और कम प्रतिनिधित्व वाले समुदाय हमें इस ज्ञान तक ले जाने का सुगम मार्ग प्रशस्त करते हैं। हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम में इन समुदायों का और उनके पारंपरिक ज्ञान का अपर्याप्त प्रतिनिधित्व पाया जाता है। यदि इन पहलुओं पर ध्यान दिया जाए तो पाठ्यक्रम अल्पसंख्यक समाज के ताने-बाने में बुने हुए मूल्यों और पारंपरिक पारिस्थिति कि ज्ञान को प्रतिबिंबित करने में सहायक होगा। ऐसा पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करता है और उन्हें दिशा प्रदान करता है कि क्या पढ़ाना है, कब पढ़ाना है और कैसे पढ़ाना है। साथ ही साथ छात्रों के लिए भी मानक स्थापित करता है जिनपर खरे उतरकर न केवल उन्हें इन पारंपरिक प्रथाओं का बोध होता है बल्कि वे इन प्रथाओं को अपने जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी होते हैं। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस प्रोग्राम को तीन चरणों में पूरा किया गया। पहले चरण में प्रतिभागियों का अलग-अलग विषयों पर ऑरिएंटेशन हुआ जिसमें उन्हें हिंदी-शिक्षण और एड-टेक टूल्स के प्रयोग पर प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे चरण में अध्ययन-यात्रा सम्पन्न की गई  जिसके दौरान प्रतिभागी एक महीने की भारत यात्रा पर निकले और वहाँ उन समुदायों और संस्थाओं के कार्यकर्ताओं से मिले जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किये हैं। शिक्षण-यात्रा के लिए निम्नलिखित स्थानों और विषयों का चयन किया गया था :

- नैनीताल, उत्तराखंड में जल प्रदूषण और भूस्खलन को कम करने के उपाय
- जिम कॉर्बेट नैशनल पार्क और सरिस्का टाइगर रिज़र्व में वन्य जीवों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव
- देहरादून, उत्तराखंड में नवधान्य जैव विविधता फार्म की सतत कृषि पद्धतियाँ
- डहाणू , महाराष्ट्र में वारली समुदाय की सतत जीवन-शैली
- अलवर, राजस्थान में तरुण भारत संघ द्वारा जलवायु अनुकूलन और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के उपाय

इन स्थानों से प्रतिभागियों ने दृश्य-श्रव्य संसाधनों, किताबों और कलाकृतियों के रूप में शिक्षण सामग्री एकत्रित की। इस एकत्रित सामग्री से तीसरे चरण में पाठ्य सामग्री विकसित की गई। इन सबकी सहायता से K-14 हिंदी के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम, उच्चस्तरीय शिक्षा कोर्स, पाठ्य विवरण, पाठ-योजनायें और ई-किताबें बनाई। यह सारी सामग्री न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय की वर्चुअल हिन्दी वेबसाइट (https://wp.nyu.edu/virtualhindi/traditional-eco-lifestyles/) पर उपलब्ध है।

(ममता त्रिपाठी, पैट्रिका सबरवाल, नीना सरीन और अनुभूति काबरा-युवा हिंदी संस्थान-न्यू यॉर्क यूनिवर्सिटी फुल ब्राइट-हेस कार्यक्रम 2022 के प्रतिभागी थे:)

## प्रस्तुत कर्ताओं के परिचय

पैट्रिका सबरवाल

**पैट्रिका सबरवाल**, इंडियाना यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ा रही हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ़ केंसास (KU) में इन्होंने हिंदी कार्यक्रम का नेतृत्व किया और कुछ ही समय में कार्यक्रम को नए आयाम तक पहुँचा दिया। इसके साथ ही विश्व भाषा शिक्षकों के प्रमुख राष्ट्रीय संघ, नेशनल कौंसिल ऑफ़ लेस कॉमनली टॉट लैंग्वेजइस (NCOLCTL) के कार्यकारी बोर्ड में सदस्य बन तीन वर्षों तक कार्यरत रहीं और 2019 में क्रिटिकल लैंग्वेजेस कंसोर्शियम (CLT) के समन्वयक के पद पर नियुक्त हुईं। इन दोनों भूमिकाओं में इन्होंने लेस कॉमनली टॉट लैंग्वेजइस (LCTLs) को बढ़ावा दिया और विशेष रूप से हिंदी की दृश्यता बढ़ाने पर काम किया।

नीना सरीन

**नीना सरीन,** जर्सी सिटी पब्लिक स्कूल में द्विभाषी शिक्षिका हैं। उन्होंने अपनी स्नातक की डिग्री गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, पंजाब, भारत से प्राप्त की । अमरीका में न्यू जर्सी सिटी विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर डिग्रियाँ, प्राथमिक स्तर/विशेष शिक्षा और द्विभाषी/द्विसांस्कृतिक शिक्षा में हासिल कीं। 2022 में इन्हें YHS Fulbright Hays GPA पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। 2023 में इन्होंने हिन्दी उर्दू टीचिंग इंस्टिट्यूट से हिन्दी टीचिंग पेडागोजी का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

ममता त्रिपाठी

**ममता त्रिपाठी** विगत ढाई दशकों से हिन्दी प्रसार में सक्रिय हैं। सन् 2008 में मोंटगोमेरी हिन्दी स्कूल तथा हिंदी भाषा केंद्र की स्थापना की। न्यू जर्सी के कीन विश्वविद्यालय, से स्नातकोत्तर डिग्री अर्जित की है। भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत में निहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विशेष रुचि रखती हैं और अपने शिक्षण में भी इनको सम्मिलित करती हैं। भारत से बाहर अलग अलग परिवेशों में हिन्दी सीखने के लिए 4 पुस्तकों का लेखन किया है।

अनुभूति काबरा

**अनुभूति काबरा** K-14 के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाती हैं। वर्तमान में वे फॉरसाइथ काउंटी स्कूल डिस्ट्रिक्ट में सब्स्टीट्यूट टीचर की तरह कार्यरत हैं। हिन्दी और अंग्रेजी में कविताएँ और ब्लॉग भी लिखती हैं। अपने हिंदी प्रेम के चलते इन्होंने एट्लांटा के एक पुस्तकालय में हिंदी पुस्तकों का एक अनुभाग खुलवाया जिसमें हिन्दी के 200 से अधिक शीर्षक रखे गए हैं। हिन्दी और अंग्रेजी के सन 2022 में युवा हिन्दी संस्थान फुलब्राइट हेज़ प्रोग्राम में पाठ योजनाएँ और ई-बुक बनाईं।

# YHS Fulbright - Hays 2022 Participants

## Graduate Students:

Audrey Geise

Travis Ghirdharie

Induja Kumar

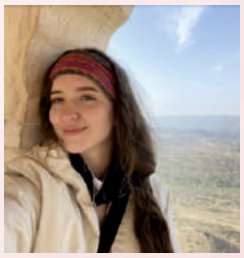
Fiona Raleigh

## Teachers:

Sandhya Bhagat

Rajni Bhargava

Anubhooti Kabra

Rachna Nath

**Milind Ranade**

**Patrica Sabarwal**

**Neena Sarin**

**Mamta Tripathi**

# Traditional Eco Life: YHS Fulbright-Hays 2022

This page offers a selection of instructional materials developed by the participants in the YHS Fulbright-Hays GPA Short Term Curriculum Development Project 2022. Included are curricula, syllabi, lessons and units consisting of several lessons. Read more about the program.

- Intermediate Curriculum 1: Scope or Sequence
- Intermediate Curriculum 2: Communities and Nature
- Advanced Curriculum: Communities and Nature
- South Asian Studies Syllabus: Redesigning with Nature
- Novice Hindi Syllabus: Communities and Nature
- Intermediate Syllabus: Communities and Nature

External Resources

- Topic Clusters (in English and Hindi)
- Novice Lesson Plan: Animals 1
- Novice Unit Plan: Animals 2
- Novice Unit Plan: Geography and People
- Novice Unit Plan: My House
- Intermediate Unit Plan: Sustainable Practices by Women in Rural India
- Intermediate Unit Plan: Rural Women Empowerment: Sakhi Milk Co. Ltd.
- Intermediate Lesson Plan: Yog daan (short story)
- Intermediate Unit Plan: About Rajasthan in Paheli
- Intermediate Lesson Plan: The Story of Valmiki
- Intermediate Unit Plan: Termites: the Super heroes of Jim Corbett Park
- Intermediate Lesson Plan: Warli Folk Tale
- Intermediate Lesson Plan: Warli Eco Lifestyle
- Advanced Lesson Plan Plan: Panchtatva 1
- Advanced Lesson Plan: Panchtatva 2
- Advanced Unit Plan: The Super heroes and Super heroines of Nainital
- Advanced Lesson Plan: Women Empowerment: Sakhi
- Performance Tasks: House/Home (Novice and Intermediate)
- Performance Task: Water Crisis (Intermediate Range)
- Performance Tasks: Miscellaneous (Intermediate Low/Mid)
- Performance Tasks: Traditional Occupations (3 levels)

# पाँचवा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

## न्यू यॉर्क, अक्टूबर 20-21 , 2023

## The Fifth International Hindi Conference

New York, October 20-21, 2023

## हिंदी संगम फ़ाउंडेशन

### Advisor

Hon. Randhir Jaiswal, Consul-General, The Consulate General of India, NY NY;

### Coordinators

Hon. Suman Singh, HOC, The Consulate general of India, New York;
Ashok Ojha, President, Hindi Sangam Foundation/Yuva Hindi Sansthan.

### Organizing Committee:

Purnima Desai, Chairperson, HSF;
Upendra Chivukula, Chairperson, Yuva Hindi Sansthan;
Ashok Ojha, President, Hindi Sangam Foundation/Yuva Hindi Sansthan;
Hon. Suman Singh, HOC, The The Consulate General of India, New York, NY;
Prof. Pritesh Chakraborty,Acharya Sukumar Sen Mahavidyalaya, Gotan, Purba Bardhaman, West Bengal, India.

### Academic Committee:

Prof. Gabriela Nik llieva, New York university, USA (Chair);
Prof. Rajiv Ranjan, Michigan State University, USA;
Prof. Rekha Sethi, Indraprastha College, University of Delhi;
Prof. Rajni Bhargava, New York University, USA;
Prof. Pritesh Chakraborty,(Tech consultant).

### Organizing institution

HINDI SANGAM FOUNDATION, NJ, USA.

### Host

The Consulate General of India, 3 East, 64 St. New York 10065, NY

The Consulate Youtube and Facebook channels will relay day long activities.

**Conference website:**

http://ihc2023.in

# हिंदी संगम फ़ाउंडेशन

सज्जा/डिज़ाइन/तकनीकी सहयोग: लक्ष्मी कुमार
प्रकाशक: हिंदी संगम फ़ाउंडेशन, भारत B 204,
मीडिया सोसाइटी, द्वारका, सेक्टर 7, नई दिल्ली 110075
hindiconferencenyc2014@gmail.com
संपादक: अशोक ओझा
मुद्रक: सुनील ग्राफ़िक (sunil_graphic@yahoo.co.in)

मूल्य: (भारत में) Rs. 200/- (भारत के बाहर) USD 5 Dollar